

अंक एक

Opening Music

(नगर के प्रमुख व्यवसायी एवं धनपति शशिकान्त सुराणा के घर का डाइनिंग रूम। सुसज्जित परन्तु आत्मीयता एवं सुरुचि से अधिक दिखावट पर अधिक ज़ोर। पर्दा उठने पर सुराणा परिवार के चारों सदस्य एवं सुनीत मेज पर बैठे हैं। शशिकान्त मेज के एक तरफ, उनके सामने उनकी पत्नी कामिनी, निधि और सुनीत मेज के एक ओर तथा आलोक एक ओर बैठे हैं। डिनर अभी खत्म हुआ है। नौकरानी माया मेज की सफाई कर रही है और उसके बाद सिगरेट, सौंफ तथा अन्य सामान ला कर रखती है। इसके बाद ट्रॉली से किसी विदेशी वाइन की बोतल उठा कर रखती है।)

- शशिकान्तः खाने के बाद रैड वाइन, गुड। (सुनीत की तरफ खिसका कर) तुम्हारे फादर को भी ये ही वाइन पसन्द है।
- सुनीतः तब तो अच्छी ही होगी। उन्हें वाइन की अच्छी परख है। पर मैं तो इस मामले में एक दम अन-नोन हूँ।
- कामिनीः फिर शुरू हो गये आप, बूँदों की तरह हमेशा वाइन के बारे में ही जानकारी हासिल करते रहो, बस।
- शशिकान्तः पर मैं तो अभी बूढ़ा नहीं हुआ।
- कामिनीः हां, और इसीलिये आपको वाइन के बारे में पूरी जानकारी भी नहीं।
- शशिकान्तः कामिनी, मैं तो कहता हूँ आज खुशी के मौके पर तुम्हें भी थोड़ी सी ज़रूर लेनी चाहिये।
- निधिः हां मम्मी, हमारी खुशी के लिये थोड़ी सी तो ज़रूर लेनी चाहिये।
- कामिनीः अच्छा-अच्छा, बस थोड़ी सी देना। (शशिकान्त सबके लिये वाइन सर्व करता है। माया से, जो खाने की ट्रॉली ट्रे ले कर जाने तैयारी कर रही है। 'कुछ और तो नहीं चाहिये' के भाव से देखती है।) जब हमें कॉफो की ज़रूरत होगी तुम्हें बुला लेंगे, क़रीब आधे घन्टे बाद।
- मायाः (जाते हुए) जी मेम साहब।
- शशिकान्तः (माया जाती है। सब लोग वाइन का गिलास हाथ में उठाते हैं। शशिकान्त के चीयर्स करने के बाद सब पीना शुरू करते हैं।)
- शशिकान्तः बहत बढ़िया, मज़ा आ गया, खाना भी लाजवाब था कामिनी। माया को मेरी तरफ से कह देना कि नारायण
- कामिनीः (बात काट कर) कैसी बातें करते हो जी।
- शशिकान्तः कम आँन, सुनीत भी तो घर का ही आदमो है, ये क्यों बुरा मानेगा ?
- सुनीतः (नम्रता से) एक्सलैन्ट सर, फन्टास्टिक!!!
- निधिः (झूठे गुस्से से) सुनीत, ज़रा बुरा मान कर तो दिखाओ।
- सुनीतः (मुस्कराते हुए) मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैं भी तो अब इस घर का मैम्बर हो गया हूँ। कितने दिन से मैं इसको कोशिश कर रहा था, है कि नहीं? (निधि को देख कर) तुम तो सब कुछ जानती हो।
- कामिनीः (मुस्कुराते हुए) हां-हां, उसे सब कुछ मालूम है।
- निधिः (कुछ गम्भीरता से और कुछ शरारत से) हां, सिफ पिछली गर्मियों को छोड़ कर, जब तुम मेरे पास फटके भी नहीं, और मैं ये ही सोचती रह गई, पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है?
- सुनीतः मैंने तुम्हें बताया तो था - मैं उन दिनों अपने काम में बिज़ी था।
- निधिः (हल्के व्यंग से) हां, कहा ये ही था।

- कामिनी:** अब छोड़ निधि, तंग मत कर उसे। शादी के बाद ही तुम्हें समझ में आयेगा, आदमी को अपने बिज़नैस के चक्कर में रात दिन एक करना पड़ता है। मेरी तरह तुम्हें भी आदत पड़ जायेगी।
- निधी:** लगता तो नहीं। (सुनीत को शरारत से देख कर) इसलिये थोड़ा खबरदार ही रहना।
- सुनीत:** हाँ-हाँ, क्यों नहीं। (आलोक, जो अभी तक चुप था, अचानक ज्ञार से हँस देता है। मां-बाप उसे घूर कर देखते हैं।)
- निधी:** (सख्ती से) इसमें हँसने की क्या बात है?
- आलोक:** पता नहीं, बस अचानक हँसी आ गई।
- निधी:** लगता है तुम्हें चढ़ गई है।
- कामिनी:** निधी, तुम्हारी लैन्वेज़ कितनी गन्दी होती जा रही है। पता नहीं आजकल की लड़कियां कहां से ये बातें सीख जाती हैं।
- आलोक:** दिन-रात टीवो सीरियल और फिल्में देख कर ये ही तो सीखती है ये।
- निधी:** नाऊ स्टॉप दिस, आलोक।
- कामिनी:** (सख्ती से) अच्छा अब बंद करो इसे। (शशिकान्त से) आप कुछ कहने वाले थे।
- शशिकान्त:** हाँ-हाँ, क्यों नहीं। (गला साफ करता है।) सुनीत मुझे खुशी है कि तुम्हें ये छोटी सी पार्टी पसंद आयी, पर अफसोस भी है कि कोठारी साहब और मिसिज़ कोठारी यहां मौजूद नहीं हैं। पर किया भी क्या जा सकता है। हालांकि उन्होंने बहुत ही अच्छा टेलीग्राम भेजा पर यों चुपचाप ये पार्टी सेलिब्रेट करते हुए कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।
- कामिनी:** पार्टी चाहे छोटी सी ही सही पर अच्छा लग रहा है। हाँ तुम्हारे मम्मी पापा होते तो और भी अच्छा लगता।
- सुनीत:** मैं भी ऐसी ही पार्टी चाहता हूं।
- शशिकान्त:** मैं भी, पर शब्दों में बयान करना कितना मुश्किल लग रहा है।
- आलोक:** (रुखेपन से) तो मत कीजिये।
- शशिकान्त:** नहीं-नहीं आलोक, आज की रात मेरी ज़िन्दगी की सबसे खुशग़वार रात है। ये बात तुम तब समझोगे जब तुम खुद एक लड़की के बाप बनोगे। (स्वर बदल कर सुनीत से) सुनीत, मैं तुम्हें साफ बता देना चाहता हूं कि निधि और तुम्हारी एंगेजमेंट मेरे लिये बहुत इम्पॉटन्ट है। मुझे यकीन है तुम दोनों एक दूसर को खुश रखोगे। मेरी दिली ख्वाहिश थी कि मुझे तुम जैसा ही कोई दामाद मिले। बिज़नैस में हम एक दूसरे के राइवल रहे हैं पर आज तुम्हारी वजह से दोनों एक हो गये हैं। वो दिन दूर नहीं है जब दोनों कम्पनियां एक दूसरे के साथ मिल कर काम करेंगी। खर्चा कम होगा और प्रोफिट ज्यादा।
- सुनीत:** बिल्कुल ठीक। मुझे पक्का यकीन है कि पापा भी इसके लिये तैयार हो जायेंगे।
- कामिनी:** सुनिये, ऐसे मौके पर बिज़नैस की बातें करना अच्छा लगता है क्या?
- निधि:** मुझे भी नहीं। ये एकदम गलत मौका है।
- शशिकान्त:** आइ एगी विद यू। मैंने तो बस ऐसे ही ज़िक्र कर दिया था। दरअसल मैं कहना चाहता था कि निधि की किस्मत बहुत अच्छी है, एण्ड यू आर टू ए लकी बॉय सुनीत।
- सुनीत:** जानता हूं सर, आज तो हर तरह से लकी हूं।
- शशिकान्त:** तो मैं तुम दोनों के लिये ज़िन्दगी की सारी खुशियों को कामना करता हूं।
- कामिनी:** हाँ सुनीत और निधि, हमारी मुबारकबाद और ढेरों शुभकामनाएं।
- सुनीत:** थैन्क्यू।
- कामिनी:** आलोक...

- आलोकः** (शारे सा करते हुए) ऑल द बैस्ट। बस कभी-कभी इसका पारा चढ़ जाता है पर दिल की बहुत अच्छी है निधि।
- निधिः** बदमाश....! ममा, मैं किसके लिये विश करूँ। अपने लिये तो नहीं कर सकती न।
- सुनीतः** तुम मेरे लिये कर सकती हो।
- निधिः** (शांत और गंभीर) ठीक है, (एक क्षण के लिये दोनों एक दूसरे को देखते हैं)
- सुनीतः** (धीरे से) थैंक्स फॉर योर..... आशा करता हूँ जितना सुख तुम्हें चाहिये उतना सुख मैं तुम्हें दे पाऊंगा।
- निधिः** (सहज होने की कोशिश में) बस-बस सुनीत, नहीं तो मैं रो पड़ूँगी।
- सुनीतः** (मुस्कुराते हुए) शायद इससे तुम्हारा रोना बन्द हो जाये। (अंगूठी की डिबिया निकालता है)
- निधिः** (खुशी से) ओह सुनीत, तुम ले ही आये। ये वो ही है न जो तुम मुझे देना चाहते थे। ओह हाउ स्वीट आॉफ यू।
- सुनीतः** (डिबिया उसे देते हुए) हाँ, बिल्कुल वो ही।
- निधिः** (अंगूठी निकाल कर) मेरे स्व्याल से ठीक ही है। अब लग रहा है कि वाकई मेरी सगाई हो गई है।
- कामिनीः** वो तो है ही बेटा। बहुत ही सुन्दर अंगूठी है। अब ध्यान रखना इसका।
- निधिः** मैं तो एक पल के लिये भी इसे अपनी आंखों से दूर नहीं होने दूँगी।
- कामिनीः** (मुस्कुराते हुए) बिल्कुल सही मौके पर लाये हैं सुनीत। (शशिकान्त से) सुनिये, अगर आपको और कुछ नहीं कहना है तो मैं और निधि ड्राइंग रूम में चले जाते हैं और आप लोग तब तक....
- शशिकान्तः** (थका हुआ सा) बस, मुझे इतना ही कहना है। (निधि को अभी तक अंगूठी में खोये हुए देख कर) तुम सुन रही हो न निधि? ये तुमसे भी ताल्लुक रखता है।
- निधिः** सॉरी पापा, दरअसल मैं सुन ही रही थी। (सभी ध्यान देते हैं। वो शुरू करने से पहले एक क्षण रुकता है)
- शशिकान्तः** इस सगाई से मैं बहुत खुश हूँ, हालांकि लोग इन दिनों हमारे बिज़नेस के बारे में बहुत सी उल्टी-सीधी बातें कर रहे हैं, पर इस सगाई के लिये इससे अच्छा वक्त और कोई नहीं हो सकता था। पिछले महीने फक्टरी में मजदूरों ने हड़ताल क्या कर दी, लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि बहुत जल्दी ही लेबर प्रॉब्लम उठ खड़ी होगी। पर फिक्र मत करो, हम तो इससे भी बुरा वक्त देख चुके हैं। हालात को देखते हुए अब हम मालिक लोग भी एकजुट हो रहे हैं ताकि हमारी पूँजी और हमारे फ़ायदे बचे रहें। हम लोग धीरे-धीरे तरक्की की तरफ बढ़ रहे हैं।
- सुनीतः** आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं सर।
- आलोकः** पर, अगर वाँ छिड़ गई तो ..?
- शशिकान्तः** मैं प्रैक्टिकल और एक्सपीरियन्ड बिज़नेस मैन होने के नाते कह रहा हूँ कि लड़ाई का कोई चांस नहीं। दुनिया इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है कि लड़ाई की गुंजाइश ही नहीं रहती। चारों तरफ जो तरक्की हो रही है, उसे ही देख लो। चार-पांच साल में तो ऐसे अंतरिक्ष-यान भी आ जायेंगे जो हमें कहीं भी ले कर जा सकते हैं। उस वक्त तुम ऐसी दुनियां में रह रहे होगे जहां न तो मजदूर-मालिकों के झगड़े होंगे और न ही फिज़ूल की लड़ाई-वड़ाई का डर होगा। चारों तरफ शांति और खुशहाली होगी, सिवाय उन देशों के जो हमेशा पिछड़े रहेंगे।
- कामिनीः** बस भी करो अब।

- शशिकान्तः:** हां-हां मैं जानता हूं, मैं बहुत ज्यादा बोल रहा हूं। पर बेटा, मैंने जो कुछ भी कहा है, उसे तुम लोग ज़रूर याद रखना। ऐसा नहीं कि नेता लोग ही सारे बातें जानते हैं। एक ऐक्सपीरियन्ड विजनैसमैन को भी कुछ बोलना चाहिये। उसकी बातों में भी दम होता है। हम हवा में यूं ही तीर नहीं मारते।
- कामिनीः** हां-हां, आप ठीक कहते हैं। अच्छा, सुनीत को ज्यादा देर मत रोकना। आलोक तुम ज़रा इधर आओ। (निधि और आलोक के साथ बाहर चली जाती है। सुनीत और शशिकान्त रह जाते हैं।)
- शशिकान्तः:** सिगार?
- सुनीतः** नो थैन्क्स, अच्छा नहीं लगता।
- शशिकान्तः:** (खुद लेते हुए) ओह तुम क्या जानो इसका मज्जा। मुझे तो अच्छा सिगार ही पसन्द है। (शशिकान्त सिगार और सुनीत सिगरेट जला लेते हैं) खैर, मैं ये कहना चाहता हूं कि अगले साल मुझे एम. पी. का टिकिट मिलने का पूरा चान्स है।
- सुनीतः** अरे वाह, मुबारक हो!
- शशिकान्तः:** थैन्क्स, पर अभी तो उसके लिये बहुत बक्त फड़ा है इसलिये अभी कुछ मत सोचो। मुझे ऐसे ही कहीं से पता चला है। तुम तो जानते ही हो, मैं पांच साल से यहां की म्युनिस्पल कॉर्पोरेशन का मैम्बर रह चुका हूं और पार्टी में भी मेरे फवर में काफो सपोर्ट है। बस, इस बीच सब कुछ ठीक ठाक रहे। पुलिस के या स्कैन्डल के चक्र में ना पड़ें तो कुछ भी मिल सकता है।
- सुनीतः** आप तो काफो रैप्टेट हैं सर, फिर क्या परेशानी हो सकती है।
- शशिकान्तः:** हम भी ऐसा ही सोचते हैं।
- सुनीतः** मुझे नहीं लगता ऐसी कोई दिक्कत आयेगी आपको। मैं तो आपको एडवान्स में मुबारकबाद दे रहा हूं।
- शशिकान्तः:** नहीं-नहीं, कुछ नहीं कहा जा सकता है, और किसी से ये बात कहना भी नहीं।
- सुनीतः** ममा से भी नहीं ? वो तो बहुत खुश होंगी ये जान कर।
- शशिकान्तः:** ठीक है, जब वो लौट आये तो तुम उन्हें हल्की सी हिन्ट दे देना। आने वाले कुछ महीनों में हमें अपने आपको हर मुसीबत से दूर रखना होगा।
(दोनों हसते हैं। आलोक आता है।)
- आलोकः** क्या बात है ? पापा ने फिर कोई कहानी शुरू कर दी ?
- शशिकान्तः:** नहीं, और वाइन पीओगे ?
- आलोकः** (बैठते हुए) ज़रूर। मम्मी का ख्याल है हमें ज्यादा देर नहीं करनी चाहिये। पर इससे क्या फर्क पड़ता है। मैं जब आया, वो दोनों कपड़ों की बातें ही कर रही थीं। ऐसा लगता है शादी के पहले लड़कियों के पास कपड़े होते ही नहीं। पता नहीं क्यों हद से ज्यादा परेशान रहती हैं? बोर कर दिया मुझे।
- शशिकान्तः:** बेटा, औरत के लिये कपड़े बहुत अहम चीज होती है। सिफ पहनने या सुन्दर दिखाने के लिये नहीं, बल्कि ये उनके लिये सैल्फ-ऐस्पैक्ट की निशानी भी होती है।
- सुनीतः** बिल्कुल सही है।
- आलोकः** (अचानक) हां, मुझे याद है.... (रुक जाता है।)
- शशिकान्तः:** क्या याद है तुम्हें ?
- आलोकः** (खोया हुआ सा) कुछ नहीं।
- शशिकान्तः:** कुछ नहीं ?
- सुनीतः** (मज़े लेता हुआ) मुझे तो मामला कुछ गड़बड़ लग रहा है।

- शशिकान्तः:** (उसी अन्दाज में) हाँ, पता नहीं आजकल के लड़के क्या कर बैठें। मैं जब आलोक की उम्र का था तो न तो मेरे पास इतना फालतू पैसा होता था और न ही वक्त। काम से फर्स्त ही नहीं मिलती थी। फिर भी कभी-कभार मौका निकाल कर थोड़ी बहुत मौज-मस्ती मार लिया करते थे।
- सुनीतः:** (हल्केपन से) मुझे पक्का यक्कीन है आपने ज़रूर ऐसा किया हागा।
- शशिकान्तः:** (गंभीरता से) पर तुम लोगों में से ज्यादातर लोग इस बात को नहीं समझते कि आजकल जबकि चीजें ज्यादा आसान हैं तो भी आदमी को अपना रास्ता खुद ही तय करना पड़ता है और अपनी देखभाल खुद करनी पड़ती है। इसके साथ अपने परिवार को भी संभालना पड़ता है। 'हमें एक दूसरे का ख्याल रखना चाहिये' वैराग्रह जुमले सिफ कम्युनिटी बकवास के अलावा और कुछ नहीं है। मैंने अपने तजुर्बे से सीखा है कि आदमी को अपने काम से मतलब होना चाहिये। अपनी देखभाल खुद करो और अपने-अपने... (ज़ोर से दरवाजे की घंटी बजती है और शशिकान्त रुक जाता है।)
- आलोकः:** कोई आया है।
- शशिकान्तः:** माया देख लेगी। सुनीत, थोड़ी वाइन और लो, फिर हम लोग भी उधर ही चलेंगे और इस तरह तुम मेरे लैक्वर से भी बच जाओगे।
- आलोकः:** हाँ पापा, आज तो आपने हद कर दी।
- शशिकान्तः:** खुशी का मौका है। इसीलिये लगता है कि मेरे एक्सपीरियन्स से तुम लोगों को भी कुछ फायदा उठाना चाहिये। (माया आती है।)
- मायाः:** सर, कोई इन्सपैक्टर आये हैं।
- शशिकान्तः:** इन्सपैक्टर? किस तरह का इन्सपैक्टर?
- मायाः:** पुलिस इन्सपैक्टर। अपना नाम शैलेश दत्त बताते हैं।
- शशिकान्तः:** शैलेश दत्त? मैं नहीं जानता। वो मुझ से मिलना चाहता है?
- मायाः:** हाँ, सर। कहते हैं बहुत ज़रूरी काम है।
- शशिकान्तः:** ठीक है, यहीं ले आओ। (माया बत्ती जला कर चली जाती है।) हो सकता है किसी लेबर प्रॉब्लम के सिलसिले में मिलने आया हो।
- सुनीतः:** (मज़ाक के मूड में) ऐसा ही होगा। हाँ, अगर आलोक ने कोई गड़बड़ न की हो तो।
- शशिकान्तः:** (मज़े ले कर) तब तो बहुत दिक्कत हो जायेगी।
- आलोकः:** (असहज तीखे पन से) मतलब क्या है आप लोगों का?
- सुनीतः:** कुछ नहीं, कुछ नहीं, तुम जब यहाँ नहीं थे, उस वक्त हम लोग आपस में हँसी मज़ाक कर रहे थे।
- आलोकः:** (अभी भी असहज) इसमें मुझे तो कोई मज़ाक नज़र नहीं आता।
- शशिकान्तः:** (घूर कर देखते हुए) आलोक, क्या हो गया है तुम्हें?
- आलोकः:** कुछ नहीं।
- मायाः:** (दरवाजा खोलते हुए) इन्सपैक्टर शैलेश दत्त। (इन्सपैक्टर अन्दर आता है।)
- शैलेशः:** मिस्टर शशिकान्त सुराणा?
- शशिकान्तः:** क्या लेंगे? व्हिस्की, रम या...?
- शैलेशः:** नो थैन्क्स, आय एम ऑन ड्यूटी।
- शशिकान्तः:** आप नये आये हैं?
- शैलेशः:** जी हाँ, मैं अभी-अभी ट्रांस्फर होकर आया हूँ।
- शशिकान्तः:** मुझे भी ऐसा ही लगा। मैं कई साल नगर निगम का मैम्बर रहा हूँ, इसलिये शहर की पुलिस से मेरी अच्छी जान-पहचान है। लेकिन मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा।

- शैलेशः** जी हां, बिल्कुल।
- शशिकान्तः** बताइये, मैं आपके लिये क्या कर सकता हूं? कोई स्ट्राइक-विस्ट्राइक का चक्कर है?
- शैलेशः** जी नहीं।
- शशिकान्तः** (थोड़ी बेसब्री से) फिर क्या बात है?
- शैलेशः** मिस्टर सुराणा अगर आपको एतराज़ न हो तो, मैं थोड़ी सी इन्फॉर्मेशन चाहता था। (जेब से नोट बुक और पैन निकालते हुए) अभी किसी लड़की ने एस. एम. एस. हॉस्पिटल में दम तोड़ दिया है। उसे आज दोपहर ही वहां लाया गया था क्योंकि उसने ज़हर खा लिया था और जिसकी वजह से उसकी आंतें पूरी तरह से सड़ गई थीं।
- आलोकः** (अनायास ही) बाप रे!
- शैलेशः** काफो बुरी मौत हुई बेचारी की। डाक्टरों ने उसे बचाने की हर कोशिश की पर वो बच नहीं सकी। सुसाइड ही कहना चाहिये।
- शशिकान्तः** (बेसब्री से) च..च..च.., काफो बुरा हुआ बेचारी के साथ। लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आप यहां क्यूं....
- शैलेशः** (तेजी से काटते हुए) मैं उसके कमरे में गया था, वहां मुझे एक चिढ़ी और डायरी मिली और जैसा अक्सर इस तरह की लड़कियां करती हैं, इसने भी अपने दो-तीन नाम रखे हुए थे। पर उसका असली नाम था शिवानी माथुर।
- शशिकान्तः** (सोचते हुए) शिवानी माथुर...?
- शैलेशः** आपको उसकी याद है मिस्टर सुराणा?
- शशिकान्तः** (धीरे-धीरे) नहीं। नाम कुछ सुना हुआ तो लग रहा है पर याद कुछ नहीं आ रहा है। लेकिन इससे मेरा क्या लेना-देना?
- शैलेशः** वो कभी आपकी फक्ट्री में काम करती थी।
- शशिकान्तः** ओह! ये बात है, पर...। हमारे यहां तो कई लड़कियां आती जाती रहती हैं।
- शैलेशः** लेकिन शिवानी नाम की ये लड़की उनसे काफो अलग थी। उसके सामान में मुझे उसका एक फोटो भी मिला है। शायद उससे आपको कुछ याद आ जाये।
- (इन्स्पैक्टर पोस्ट कार्ड साइज़ का एक फोटो निकालता है और शशिकान्त के पास जाता है। सुनीत और आलोक भी फोटो देखना चाहते हैं पर इन्स्पैक्टर बीच में आ जाता है। दोनों थोड़ा हैरान और नाराज़ होते हैं। शशिकान्त फोटो को धूरता रहता है और पहचान लेता है। इन्स्पैक्टर फोटो वापस जेब में रख लेता है।)**
- सुनीतः** (गुस्से से) कोई खास वजह इन्स्पैक्टर जो मैं इस लड़की की फोटो नहीं देख सकता?
- शैलेशः** (सख्ती से देखता है पर फिर सामान्य हो कर बात करता है।) शायद हो।
- आलोकः** और ये वजह मुझ पर भी लागू होती है?
- शैलेशः** हां।
- सुनीतः** मेरी तो समझ में नहीं आ रहा ऐसी क्या वजह हो सकती है।
- आलोकः** हां, मैं भी नहीं समझ पा रहा।
- शशिकान्तः** इन्स्पैक्टर, आपका एटोट्यूड मेरी समझ में नहीं आ रहा है।
- शैलेशः** मेरे काम करने का ये ही तरीका है। एक समय में एक ही इन्कायरी। नहीं तो सब मिक्स-अप हो जाता है।
- शशिकान्तः** हूं... ये बात तो ठीक है। (परेशान सा घूमता है, फिर तनिक अन्तराल के बाद) तुम काफो पी चुके हो आलोक। (इन्स्पैक्टर शशिकान्त को देख रहा है और अब शशिकान्त भी उसका जायज़ा लेता है।)
- शैलेशः** मेरा रुयाल है सुराणा साहबअब आपको शिवानी की याद आ गई होगी?

- शशिकान्तः:** हां, हमारी पैकट्री में काम करती थी, पर बाद में मैंने उसे निकाल दिया था।
- आलोकः:** क्या इसलिये उसने आत्महत्या कर ली? ये कब की बात है पापा?
- शशिकान्तः:** चुपचाप बैठो और एक्साइटड होने की ज़रूरत नहीं है। ये लड़की हमारी नौकरी करीब दो साल पहले छोड़ गई थी, शायद टूथाउन्ड वन के विन्टर्स में।
- शैलेशः:** हां, टूथाउन्ड वन नवम्बर के एण्ड में।
- शशिकान्तः:** बिल्कुल ठीक।
- सुनीतः:** अंकल, मेरे ख्याल से मुझे यहां से चला जाना चाहिये।
- शशिकान्तः:** नहीं-नहीं सुनीत, तुम्हारे यहां रहने पर मुझे कोई एतराज़ नहीं है। और आपको भी नहीं होगा, क्यों इस्पैक्टर? इन्फर्क्ट मुझे पहले बताना चाहिये था - आप हैं मिस्टर सुनीत कोठारी, श्री उत्तम चन्द कोठारी के सुपुत्र, कोठारीज़ ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ वाले।
- शैलेशः:** ओह, सुनीत कोठारी?
- शशिकान्तः:** हां, इंसीडैन्टली हम लोग सुनीत के साथ अपनी बेटी निधि की एंगेजमैंट सेलीब्रेट कर रहे थे।
- शैलेशः:** ओह, आइ सी। तो मिस्टर कोठारी और मिस सुराणा शादी कर रहे हैं।
- सुनीतः:** (मुस्कुराते हुए) लगता तो ऐसा ही है।
- शैलेशः:** (सख्ती से) फिर तो मिस्टर कोठारी आपको यहीं रुकना होगा।
- सुनीतः:** (हैरान सा) क्या? ठीक है।
- शशिकान्तः:** (कुछ बेसब्री से) देखिये, जहां तक मेरा सवाल है, इस मामले में कोई स्कैन्डल या किसी तरह का रहस्य नहीं है। एकदम सीधा सा केस है। उस अट्टारह महीने या दो साल पहले नौकरी से निकाला गया था, उसी से ये साफ हो जाता है कि उस बेवकूफ लड़की की आत्महत्या से हमारा कोई संबंध नहीं है।
- शैलेशः:** नो सर, यहां मैं आपसे एग्री नहीं करता।
- शशिकान्तः:** क्यों?
- शैलेशः:** क्योंकि उसका ये हश्श इस बात पर निर्भर करता है कि उस घटना के बाद उसके साथ क्या हुआ और बाद में जो कुछ घटा उसी ने उसे आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया। घटनाओं का एक लम्बा सिलसिला।
- शशिकान्तः:** ठीक है। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन मैं अभी भी ये मानने को तैयार नहीं हूं कि इस सबके लिये मैं ज़िम्मेदार हूं। अगर हम सभी का ज़िम्मा ले लेंगे तो बड़ी प्रॉब्लम हो जायेगी।
- शैलेशः:** हां, हो तो जायेगी।
- शशिकान्तः:** हमने कोई दुनिया भर का ठेका नहीं ले रखा है।
- आलोकः:** बिल्कुल। और जैसा कि आप कह रहे थे पापा कि आदमी को खुद की देखभाल..
- शशिकान्तः:** ठीक है, पर अभी उन बातों में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।
- शैलेशः:** किन बातों में?
- शशिकान्तः:** बात ये है कि आपके आने से पहले मैं इन बच्चों को एक नसीहत दे रहा था। जहां तक इस लड़की शिवानी की बात है, अब मुझे उसके बारे में याद आ गया है। वो एक खूबसूरत और ज़िन्दादिल लड़की थी जो करीब एक साल से भी ज्यादा वक्त से हमारी एक वर्कशॉप

में काम कर रही थी। काम करने में अच्छी थी। असल में यूनिट इंचार्ज ने मुझे बताया था कि वो उसे प्रमोट करना चाहता है, कुछ लड़कियों की हैड के तौर पर। लेकिन जब वो दशहरे की छुट्टियों के बाद वापस आई तो कुछ परेशान सी थी और अचानक ही एक दिन वो पैसा बढ़ाने की मांग करने लगी। हम उन्हें करीब एक सौ पैंतीस रुपये दे रहे थे जो आम रेट है। हर जगह इतना ही दिया जाता है। पर वो चाहती थी कि उन्हें कम से कम एक सौ पिचहतर रुपये रोज मिलें। मैंने इन्कार कर दिया।

शैलेशः

क्यों?

शशिकान्तः

(हैरानी से) क्या कहा आपने, 'क्यों'?

शैलेशः

जी हाँ, आपने मना क्यों कर दिया?

शशिकान्तः

देखिये इन्सपैक्टर, मुझे नहीं लगता आपको इससे कोइ मतलब होना चाहिये कि मैं अपना बिजनेस कैसे चलाता हूँ। क्यों?

शैलेशः

मतलब हो भी सकता है, मि. सुराणा।

शशिकान्तः

ये आप किस तरह बात कर रहे हैं?

शैलेशः

आइ एम सॉरी, लेकिन आपने ही पूछा था।

शशिकान्तः

मैंने इसलिये पूछा था क्योंकि आप मुझसे बेकार के सवाल पूछ रहे थे।

शैलेशः

सवाल पूछना मेरी ड्यूटी है।

शशिकान्तः

और मेरी ड्यूटी है कि मैं लेबर कॉस्ट को कम रखूँ। अगर मैंने उनकी मांग मान ली होती तो जानते हैं उस नये रेट के हिसाब से हमारी लेबर कॉस्ट बियालीस परसैन्ट बढ़ जाती, समझे? इसलिये मैंन मना कर दिया। हम उन्हें नॉर्मल रेट्स दे रहे थे, और अगर उसे पसन्द नहीं थे तो वो कहीं भी दूसरी जगह जाकर काम कर सकती थी। किसी पर कोई बन्दिश तो नहीं है।

आलोकः

पर काम मिले तो न?

शैलेशः

बिल्कुल ठीक।

शशिकान्तः

(आलोक से) देखो, तुम इन सब बातों से बाहर ही रहो। तुम्हें क्या पता उस वक्त क्या हुआ था। तुमने तो तब तक काम भी शुरू नहीं किया था। (इन्सपैक्टर से) हाँ, फिर वो हड़ताल पर चली गई, पर हड़ताल ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाई।

सुनीतः

जहाँ तक मैं समझता हूँ, अगर ये छुट्टियों के बाद की बात है तो ये स्ट्राइक जल्दी ही टूट गई होगी।

शशिकान्तः

हाँ, क्योंकि उनके पास ज्यादा पैसे नहीं बचे थे इसलिये हड़ताल एक दो हफ्तों में ही खत्म हो गई। बहुत तरस आ रहा था मुझे उन पर। हमने सभी को वापस ले लिया, पुराने रेट्स पर ही। सिवाय उन चार-पांच नेतागिरी करने वालों के, जिन्होंने बाकी लड़कियों को उकसाया था। मैंने खुद जा कर उनका हिसाब साफ कर दिया। ये शिवानी नाम की लड़की उनमें से एक थी। उसके पास कहने को बहुत कुछ था, इसलिये उसको जाना पड़ा।

सुनीतः

इसके अलावा आप और कर क्या सकते थे?

आलोकः

बहुत कुछ कर सकते थे। निकालने की बजाय उन्हें रख भी सकते थे। मैं तो कहूँगा कि बेचारी शिवानी बहुत बदकिस्मत थी।

शशिकान्तः

अगर हम इन लोगों से सख्ती से पेश नहीं आयें तो बहुत जल्दी ही ये लोग बिजनेस में शेयर्स की मांग भी कर बैठेंगी।

सुनीतः

बिल्कुल ठीक कह रहे हैं आप।

शैलेशः

मैं मानता हूँ, वो मांग कर सकते थे, पर मांगना आश्विर छीनने से तो बेहतर ही है।

- शशिकान्तः:** (इन्सपैक्टर को धूरते हुए) आपने अपना नाम क्या बताया था इन्सपैक्टर?
- शैलेशः:** दत्त... शैलेश दत्त... डी. यू. टी..टी..
- शशिकान्तः:** पुलिस कमिशनर राठौड़ को जानते हो?
- शैलेशः:** मेरी उनसे ज्यादा मुलाकात नहीं है।
- शशिकान्तः:** पर मेरी है, और बहुत पुरानी दोस्ती भी है। अक्सर हम दोनों जय क्लब में ब्रिज पार्टनर होते हैं।
- शैलेशः:** (रुखेपन स) मैं ब्रिज नहीं खेलता।
- शशिकान्तः:** मेरा भी ये मतलब नहीं था कि तुम खेलते हो।
- आलोकः:** (एकदम भड़क कर) शर्म आनी चाहिये।
- शैलेशः:** नहीं, मैं कभी भी नहीं खेलना चाहता था।
- आलोकः:** मेरा मतलब उस लड़की से था, शिवानी से। मजदूरी बढ़वाने के लिये कोशिश वो क्यों नहीं करती? इसमें ऐसा क्या गुनाह कर दिया उसने? मेरी समझ में नहीं आता कि उसे निकाला क्यों गया, सिफ इसलिये कि उसमें दूसरों से थोड़ी ज्यादा हिम्मत थी। आपने खुद कहा था कि वो मेहनती और अच्छा काम करने वाली लड़की थी। मैं होता तो उसे रख लेता।
- शशिकान्तः:** (गुस्से स) पहले अपने ख्यालात सुधारो, बाद मैं किसी को रख लेने या छोड़ देने की बात करना। वक्त आ गया है कि तुम भी कुछ जिम्मेदारियों को निभाना सीख लो। लगता है पब्लिक स्कूल या कॉलेज की पढ़ाई ने तुम्हें कुछ नहीं सिखाया।
- आलोकः:** (नफरत स) पर इसके बार मैं इन्सपैक्टर को बताना क्या ज़रूरी है?
- शशिकान्तः:** इन्सपैक्टर को तो अब कुछ भी बताने की ज़रूरत ही नहीं है। (इन्सपैक्टर स) दरअसल मेरे पास और कुछ कहने को है ही नहीं। मैंने लड़की से छोड़ कर जाने के लिये कहा और वो चली गई। बस, वो ही आखरो मुलाकात थी उससे। मुझे नहीं पता बाद में उसे क्या हुआ? मुसीबत में फस गई, या गलियों में मारी-मारी फिरे लगी।
- शैलेशः:** (धीरे स) नहीं, वो एकदम सड़कों पर नहीं गई। (निधि अन्दर आती है)
- निधिः:** (खुशी स) सड़कों के बारे में क्या.....? (इन्सपैक्टर को देख कर) ओह, सॉरी, मैंने देखा नहीं। मम्मी पूछ रही हैं आप अब तक अन्दर क्यों नहीं आये?
- शशिकान्तः:** बस, हम लोग एक दो मिनिट में खत्म करके आते हैं।
- शैलेशः:** शायद नहीं।
- शशिकान्तः:** (झटके स) अब और कुछ कहने को नहीं है मेरे पास। बता तो दिया सब कुछ तुम्हें।
- निधिः:** बात क्या है?
- शशिकान्तः:** तुम्हारे मतलब की नहीं है। निधि, तुम अन्दर जाओ।
- शैलेशः:** नहीं, एक मिनिट इधर ही ठहरिये निधि जी।
- शशिकान्तः:** (चेतावनी भरे स्वर में) इन्सपैक्टर, मुझे जो मालूम था वो सब मैंने तुम्हें बता दिया है, और मैं नहीं चाहता कि अब मेरी लड़की को इस कीचड़ में घसीटा जाये।
- निधिः:** (आगे आते हुए) कौन सा कीचड़? बात क्या है?
- शैलेशः:** मैं पुलिस का आदमी हूं निधि जी। आज दोपहर में एक जवान लड़की ने ज़हर पी लिया और कई घंटों की पीड़ा के बाद अभी रात में अस्पताल में दम तोड़ दिया।
- निधिः:** ओह माइ गॉड! क्या कोई दुर्घटना हुई थी?
- शैलेशः:** नहीं, वो अपनी जिन्दगी खत्म करना चाहती थी। उसे लगा कि शायद वो अब और नहीं जी पायेगी।

- शशिकान्तः:** अब ये मत कहना कि मैंने उसे दो साल पहले नौकरी से निकाल दिया था इसलिये उसने ये सब कर लिया।
- आलोकः:** पर शुरूआत तो वहीं से हुई होगी।
- निधिः:** आपने ऐसा किया पापा?
- शशिकान्तः:** हां, लड़की फक्ट्री के काम में अड़ंगा डाल रही थी। मेरा कोई कुसूर नहीं।
- सुनीतः:** आपका कोई कुसूर नहीं है इसमें। हम लोग भी होते तो ऐसा ही करते। (निधि उसे गुस्से से घूर कर देखती है) ऐसे मत देखो निधि।
- निधिः:** (थोड़ी परेशान सी) साँरी, दरअसल उस लड़की के ख्याल को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रही हूं जिसने अपने आप को इतना गन्दे तरीके से खत्म कर लिया। काश, तुमने मुझे बताया नहीं होता। (शैलेश से) कैसी थी वो? उम्र कम थी उसकी?
- शैलेशः:** हां, सिफ चौबीस साल।
- निधिः:** देखने में कैसी थी? सुन्दर?
- शैलेशः:** आज जब मैंने उसे देखा था, तब तो नहीं थी पर वैसे बहुत सुन्दर थी।
- शशिकान्तः:** बस, बहुत हो गया अब।
- सुनीतः:** मुझे भी ये ही लगता है इन्सपैक्टर कि इस इन्कायरी से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। असली बात ये है कि सुराणा साहब की नौकरी छोड़ने के बाद उसके साथ क्या-क्या हुआ।
- शशिकान्तः:** और क्या। इतनी देर से मैं और क्या कह रहा हूं।
- सुनीतः:** और इसमें हम आपकी कोई मदद नहीं कर सकते क्योंकि हमें मालूम ही नहीं।
- शैलेशः:** (धीरे से) क्या आप यकीन से कह सकते हैं कि आपको कुछ नहीं मालूम? (बारी-बारी से सुनीत, निधि और आलोक को देखता है)
- शशिकान्तः:** कहना क्या चाहते हो तुम? इन तीनों में से किसी एक को लड़की के बारे में कुछ जानकारी है?
- शैलेशः:** जी, हां।
- शशिकान्तः:** तो तुम सिफ मुझसे मिलने नहीं आये थे?
- शैलेशः:** नहीं। (चारों आपस में परेशान से एक दूसरे को देखते हैं) (तीखे स्वर में) अगर मुझे पहले पता होता तो मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बताता। मुझे लगा मैंने जो कुछ बताया है उससे तुम सैटिस्फाइ हो जाओगे पर अब तो सारी बात ही बदल गई। तुम्हें अपनी सूचना पर पक्का यकीन है?
- शैलेशः:** कुछ तो है ही।
- शशिकान्तः:** पर मुझे लगता है तुम्हारी बातों में कोई दम नहीं है।
- शैलेशः:** पर लड़की तो मर चुकी है।
- निधिः:** इस सब का मतलब क्या है? तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे हमीं लोग उसके जिम्मेदार हैं।
- शशिकान्तः:** एक मिनिट निधि। इन्सपैक्टर, हम लोग अलग से इस पर कुछ बात कर लें तो...
- निधिः:** पर क्यों? आपके साथ उन्होंने अपनी बात खत्म कर ली है। उनके मुताबिक अब हम लोगों में से एक की बारी है।
- शशिकान्तः:** हां, पर मैं तुम लोगों के लिये ही मामले को ठीक करने की कोशिश कर रहा हूं।
- सुनीतः:** जहां तक मेरा ताल्लुक है, मुझे इस मामले से कुछ लेने-देना नहीं है। शिवानी नाम की लड़की से मेरा कोई ताल्लुक नहीं रहा है।
- आलोकः:** और न ही मेरा।
- निधिः:** क्या उसका ये ही नाम था? शिवानी?
- सुनीतः:** हां।

- निधि:** मैंने तो पहले कभी नहीं सुना।
सुनीत: अब आप क्या कहें इन्सपैक्टर साहब?
- शैलेश:** वो ही जो पहले कह रहा था सुनीत साहब। आजकल की बहुत सी लड़कियों की तरह उसके भी बहुत से नाम थे। जब सुराणा साहब ने उसे नौकरी से निकाला वो शिवानी ही थी, पर उसके बाद शिवानी नहीं रही। शायद इस नाम की वजह से वो काफो तंग आ चुकी थी।
- आलोक:** इसमें उस बचारी का कोई कुसूर नहीं था।
निधि: (शशिकान्त से) मेरे स्वाल से उसे निकालना गलत था। शायद उसी वजह से उसका सब कुछ तहस-नहस हो गया था।
- शशिकान्त:** बकवास। (इन्सपैक्टर स) मेरी नौकरी छोड़ने के बाद लड़की का क्या हुआ - कुछ पता है तुम्हें?
- शैलेश:** हाँ। अगले दो महीने तक बेकार थी। मां-बाप मर चुके थे, इसलिये लौट कर जाने के लिये कोई घर भी नहीं था। सुराणा कन्सन से जो पैसे उसे मिले थे, उसमें से ज्यादा कुछ बचा भी नहीं पाटी थी। इसलिये दो महीने के बाद बिना काम - बिना पैसे, बिना किसी दोस्त या रिश्तेदार के - अकेली, भूख से परेशान, वो बेचारी असहाय...
- निधि:** (सहानुभूति से) मैं समझ सकती हूँ - कितनी शर्म की बात है।
शैलेश: निधि जी, इस देश के हर छोटे-बड़े शहर में बहुत सी लड़कियां ऐसी बदतर जिन्दगी जी रही हैं। अगर वो न हों तो फक्ट्रीयां - कारखानों को सस्ती मजदूर कहां से मिलें। अपने पापा से पूछ लीजिये।
- निधि:** पर ऐसी लड़कियां सिफ सस्ती मजदूर ही नहीं हैं, वो जीती-जागती इन्सान भी हैं।
शैलेश: (शुष्कता से) खुद मेरे विचार भी ऐसे ही रहे हैं। कई बार तो मुझे लगता है कि ये लड़कियां जिन गन्दी झाँपड़ियों में रहती हैं, उनमें हम खुद को रख कर देखें तो हमें उनकी तकलीफों का पता चलेगा।
- निधि:** आप ठीक कहते हैं। फिर उसके साथ क्या हुआ ?
शैलेश: उसकी किस्मत अच्छी थी। उसे एक दुकान - एक बहुत ही अच्छी दुकान 'सरावगी एण्ड सन्स' के यहां काम मिल गया।
- निधि:** सरावगी? हम लोग अक्सर वहां जाते हैं। दरअसल आज दोपहर ही मैं वहां गई थी। (सुनीत से) तुम्हारे काम के चक्कर में।
सुनीत: (मुस्कुराते हुए) थैन्क यू।
निधि: हाँ, सरावगीज के यहां काम मिल जाना अच्छी किस्मत की बात है।
शैलेश: वो भी ये ही साच रही थी। दिसम्बर २००१ की शुरूआत में आइ फ्लू और मलेरिया काफो पैला हुआ था जिसकी वजह से सरावगीज के यहां आदमियों की कमी पड़ गई थी। बस, उसे मौका मिल गया। उसे भी वहां काम करना अच्छा लग रहा था। फक्ट्री से बिल्कुल अलग तरह का काम। सुन्दर-सुन्दर कपड़ों के बीच बने रहने में उसे मज़ा आता होगा, इसमें कोई शक्त नहीं। उसे लगा कि वो फिर से एक नई शुरूआत कर रही है। आप कल्पना कर सकती हैं उसने कैसा महसूस किया होगा।
- निधि:** हाँ-हाँ, क्यों नहीं।
शशिकान्त: फिर वो वहां भी मुसीबत में फस गई शायद।
शैलेश: करीब दो महीनों के बाद जब वो महसूस करने लगी कि वो बहुत अच्छी तरह से जम गई है उन्होंने भी उसे निकल जाने को कह दिया।
- शशिकान्त:** अपना काम ठीक से नहीं करती होगी।

- शैलेशः** उसके काम करने के तरीके में कोई ग़लती नहीं थी - ऐसा उन का भी मानना था।
- शशिकान्तः** पर कुछ तो ग़लती हुई होगी।
- शैलेशः** उसे सिफ इतना ही पता चला कि एक कस्टमर ने उसकी शिकायत की थी और उसे नौकरी छोड़नी पड़ गई।
- निधिः** (थोड़ी बेचैनी से) कब की बात है ये?
- शैलेशः** (ज़ोर दे कर) पिछले साल - जनवरी दो हज़ार दो के आखिर में।
- निधिः** लड़की देखने में कैसी थी?
- शैलेशः** आप यहां आ जायें तो मैं दिखा सकता हूं। (वो लैप्टप की रोशनी के पास चला जाता है। निधि उसके पास आ जाती है। फोटो को नज़दीक से देखती है, हल्की सी चीख के साथ पहचान लेती है। दबी-धुटी सी सिसकी लेती बाहर भाग जाती है। इन्सपैक्टर फोटो अपनी जेब में रख लेता है और बाहर जाती हुई निधि को देखता है। बाकी तीनों एक क्षण के लिये सन्न से खड़े रह जाते हैं।)
- शशिकान्तः** क्या हुआ उसे?
- आलोकः** शायद उसने फोटो देख कर उसे पहचान लिया था, क्यों?
- शैलेशः** हां।
- शशिकान्तः** (गुस्से से) तुम बच्ची को क्यों तंग कर रहे हो?
- शैलेशः** मैंने कुछ नहीं किया। वो खुद ही परेशान है।
- शशिकान्तः** पर क्यों - क्यों?
- शैलेशः** मुझे खुद भी नहीं मालूम। ये ही तो मुझे पता लगाना है।
- शशिकान्तः** रहने दो, पहले मैं ही पता लगा लूं, अगर तुम्हें कोई एतराज़ न हो तो।
- सुनीतः** मैं जाऊं उसके पास?
- शशिकान्तः** (जाते हुए) नहीं, मेरे ऊपर छोड़ दो। अपनी वाइफ को भी बताऊं यहां क्या चल रहा है। (दरवाज़े के पास पहुंच कर मुड़ कर इन्सपैक्टर को गुस्से से घूरते हुए) हम लोग एक छोटे सी पार्टी सेलिब्रेट कर रहे थे और तुमने आ कर सब गड्ढ-मढ्ढ कर दिया।
- शैलेशः** (तेजी से) मैं भी अस्पताल में शिवानी की लाश के पास खड़ा ये ही सोच रहा था। एक अच्छी-खासी जीती-जागती ज़िन्दगी को किसी ने तहस-नहस कर दिया।
- शशिकान्तः** विरोध करना चाहता है पर फिर ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करके चला जाता है। सुनीत और आलोक असहज से एक-दूसरे को देखते हैं। इन्सपैक्टर कोई ध्यान नहीं देता।
- सुनीतः** मैं उस फोटो को देखना चाहता हूं इन्सपैक्टर।
- शैलेशः** वक्त आने पर।
- सुनीतः** आखिर क्यों?
- शैलेशः** (काट कर, ज़ोर देते हुए) मैंने जो पहले कहा था, आपने सुन ही लिया होगा। एक वक्त पर एक इन्कायरी, नहीं तो सभी लोग एक साथ बताने लग जायेंगे और फिर कहीं नहीं पहुंच पायेंगे। अगर आपके पास मुझे बताने को कुछ है तो जल्दी ही इसका मौका मिलेगा। खैर, जैसी आपकी मर्जी, पर मुझे नहीं लगता कि मेरे पास कुछ...
- आलोकः** (अचानक चीखते हुए) मैं इससे तंग आ चुका हूं।
- शैलेशः** (रुखे पन से) मैं भी ये ही कह सकता हूं।
- आलोकः** (असहज हो कर) सौरी, दरअसल इस छोटी सी पार्टी में मैं काफ़ी पी चुका हूं और मेरे सिर में दर्द हो रहा है। यहां मेरा कोई काम भी नहीं है इसलिये मैं जाना चाहता हूं।
- शैलेशः** और मेरा स्वायाल है तुम यहीं रहो।
- आलोकः** पर क्यों?

- शैलेश:** शायद इसमें कम तकलीफ हो। अगर अन्दर चले गये तो फिर बाहर आना पड़ेगा।
- सुनीत:** बहुत ज्यादा भड़क रहे हैं आप, इन्सपैक्टर।
- शैलेश:** हो सकता है। पर अगर आप मेरे साथ ठीक से पेश आयें तो मैं भी वैसा ही करूँगा।
- सुनीत:** समझते क्यों नहीं आप, हम लोग इज्जतदार नागरिक हैं, कोई चोर-उचक्के नहीं।
- शैलेश:** कई बार दोनों में ज्यादा फ़र्क नहीं होता। अगर मुझसे पूछा जाये तो दोनों में फ़र्क करना मेरे लिये बहुत मुश्किल काम होगा।
- सुनीत:** शुक्र है कि ये काम तुम पर नहीं छोड़ा गया है।
- शैलेश:** बिल्कुल नहीं। पर कुछ काम मुझे ही करने हैं। मिसाल के तौर पर इस तरह की इन्कायरी। (निधि अन्दर आती है, लगता है रोती रही है) हां तो निधि जी ?
- निधि:** (अन्दर आकर दरवाज़ा बन्द करते हुए) आपको शुरू से पता था कि वो कस्टमर मैं ही थी ?
- शैलेश:** लड़की ने खुद जो लिखा था, उससे कुछ ऐसा ही लगा था।
- निधि:** मैंने पापा को बता दिया है। उन्हें तो इसमें कोई खास बात नहीं लगी, पर मैं उस वक्त भी परेशान थी और अब तो और भी ज्यादा हूँ। क्या इस बात से उसकी जिन्दगी पर काफ़े असर पड़ा था?
- शैलेश:** हां, पड़ा। ये उसकी आखरी पक्की नौकरी थी। और जब वो भी बिना किसी जायज़ वजह के छीन ली गई तो उसने दूसरी तरह की जिन्दगी बिताने का निश्चय कर लिया। (बेचारगी से) क्या मैं सचमुच में ज़िम्मेदार हूँ ?
- शैलेश:** पूरी तौर से तो नहीं। इसके बाद भी उसके सात बहुत कुछ हुआ, पर कुछ हद तक तुम भी कुसूरवार हो, जैसे तुम्हारे पापा।
- आलोक:** पर निधि ने किया क्या?
- निधि:** (अत्यन्त दुखी स्वर में) मैंने सरावगीज के मैनेजर से शिकायत की थी कि अगर वो उस लड़की को नहीं निकालेंगे तो मैं उनकी दुकान पर कभी नहीं आऊँगी और मम्मी से कह कर अपना सारा हिसाब-किताब बन्द करा दूँगी।
- शैलेश:** पर तुमने ऐसा किया क्यों?
- निधि:** मैं बहुत गुस्से में थी।
- शैलेश:** गुस्सा तुम्हारा था, इसमें उस लड़की ने क्या किया था?
- निधि:** मैं शीशे में खुद को देख रही थी कि मैंने उसे अपनी असिस्टेन्ट के साथ मुस्कुराते देख लिया था और मुझे उस पर गुस्सा आ गया। थोड़े गुस्से में पहले से ही थी।
- शैलेश:** क्या इसमें भी लड़की का कोई कुसूर था?
- निधि:** नहीं, बिल्कुल नहीं। मेरी अपनी ग़लती थी। (अचानक सुनीत से) ठीक है सुनीत, मुझे इस तरह से मत देखो। कम से कम मैं सच बोलने की कोशिश कर रही हूँ। कुछ काम तुमने भी ऐसे किये ही होंगे जिनके लिये शर्मिन्दा होना पड़ा होगा।
- सुनीत:** (आश्चर्य से) मैंने कब कहा कि नहीं किये, पर मेरी समझ में...
- शैलेश:** (काटते हुए) खैर छोड़ो उसे। तुम लोग एक दूसरे को बाद में समझा लेना। (निधि से) हुआ क्या था?
- निधि:** मैं एक ड्रेस ट्राइ करने गई थी। पसन्द मेरी अपनी थी। मम्मी उसके खिलाफ थी और असिस्टेन्ट भी, पर मैंने ही ज़िद की थी। ये ही लड़की वो ड्रेस ले कर आई थी। लड़की बहुत सुन्दर थी - बड़ी - बड़ी काली आंखें..। खैर, जैसे ही मैंने उसे पहन कर देखा, मैं समझ गई कि वो लोग ठीक ही थे। मुझ पर वो ड्रेस बिल्कुल नहीं ज़ंच रही थी। उन कपड़ों में मैं एकदम बेवकूफ लग रही ती। उसी वक्त मैंने उसे अपनी असिस्टेन्ट प्रिया के साथ मुस्कुराते हुए पकड़ लिया, मानों

कह रही हो, 'कितनी बेहूदा लगती है'। मुझे एकदम गुस्सा आ गया। मैंने मैनेजर के पास जाकर शिकायत कर दी कि ये लड़की कितनी असभ्य और बदतमीज है, और... और... (फट फट कर रोने लगती है, फिर अपने को नियन्त्रित करके) मुझे क्या पता था कि बाद में क्या होगा? अगर वो कोई साधारण सी लड़की होती तो शायद मैंने ऐसा नहीं किया होता पर वो बहुत सुन्दर थी। मुझे लगा वो अपने लिये कोई न कोई रास्ता निकाल लेगी। उस वक्त मुझे उसके लिये कोई अफसोस नहीं हुआ था।

शैलेशः

दूसरे शब्दों में अगर कहा जाये तो तुम्हें उसकी सुन्दरता से जलन हो रही थी।

निधिः

हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है।

शैलेशः

और तुमने शहर के जाने माने आदमी और एक अच्छे कस्टमर की लड़की के रूप में उस लड़की को सज्जा दिलवाने के लिये अपनी ताकत का इस्तमाल किया - सिफ इसलिये कि उसकी वजह से तुम्हें जलन महसूस हो रही थी।

निधिः

पर उस वक्त मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं लगा था। काश मैं उसके लिये अब कुछ कर सकती ...

शैलेशः

(कठोरता से) पर अब ऐसा नहीं हो सकता। बहुत देर हो चुकी है। वो मर चुकी है।

आलोकः

बाप रे! सोचने लगें तो कितनी परतें उघड़ती चली जाती हैं।

निधिः

(कड़वाहट से) चुप हो जाओ आलोक। मैंने ऐसा सिफ एक बार किया है और अब मैं किसी के साथ ऐसा नहीं करूँगी, कभी नहीं। सरावगीज में सभी लोग मुझे अजीब सी नज़रों से देखते हैं। आज दोपहर में भी मुझे ऐसा लगा था। शायद वहां कुछ लोगों को वो वाक्या अभी तक याद है। लगता है मैं वहां अब कभी नहीं जा पाऊँगी। ओह, क्यों हुआ ऐसा?

शैलेशः

(सख्ती से) आज रात जब मैं उसकी लाश देख रहा था तो मैंने अपने आप से भी ये ही पूछा था। तभी मैंने ये तय किया कि ये जान कर ही रहूँगा कि ऐसा क्यों हुआ? इसलिये मैं यहां हूँ और तब तक नहीं जाऊँगा जब तक पूरे वाकिये का पता नहीं कर लूँ। सुराणा कन्सर्न की नौकरी शिवानी से इसलिये छूट गई क्योंकि हड़ताल फल हो गई थी। आखिर उसे दूसरी नौकरी मिली - किस नाम से मुझे पता नहीं - एक बड़ी दुकान में, और वहां से भी इसलिये छोड़ना पड़ा क्योंकि तुम्हें अपने ऊपर गुस्सा था और वो गुस्सा तुमने उस पर उतार दिया। अब उसे कुछ और काम चाहिये था। इसलिये पहले उसने अपना नाम बदल कर श्रीया रख लिया।

(चौंक कर) क्या?

सुनीतः

(शब्दों पर ज़ोर दे कर) मैंने ये ही कहा कि उसने अपना नाम बदल कर श्रीया रख लिया।

सुनीतः

(खुद को सम्मालते हुए) अगर मैं थोड़ी सी पी लूँ, तुम्हें कोई एतराज़ होगा निधि? (निधि सिर फिलाता है - पर लगातार उसे घूरती रहती है। वो शराब के लिये उठता है।)

शैलेशः

आपके पापा कहां हैं निधि जी?

निधिः

वो ड्रॉइना रूम में मम्मी को यहीं सब बताने गये थे। आलोक इन्सपैक्टर साहब को वहीं ले जाओ। (आलोक उठता है, इन्सपैक्टर निधि और सुनीत को देखते हुए आलोक के साथ चला जाता है।) हाँ तो सुनीत?

सुनीतः

(मुस्कुराने की कोशिश करता हुआ) हाँ तो क्या निधि?

निधिः

तुम्हारी शिवानी से जान-पहचान कैसे हुई?

सुनीतः

मेरी? बिल्कुल नहीं।

निधिः

तो श्रीया के साथ सही - एक ही बात है।

सुनीतः

मुझे उससे क्या मतलब?

निधिः

पागल मत बनो। हमारे पास ज्यादा वक्त भी नहीं है। तुम तो उसी वक्त पकड़े गये थे जब उसने उसका दूसरा नाम लिया।

सुनीतः

ठीक है, मैं उसे जानता था। अब इसे यहीं खत्म कर दें।

- निधि:** नहीं, हम इसे यूं ही खत्म नहीं कर सकते।
सुनीत: (पास आते हुए) मेरी बात तो सुनो डार्लिंग।
- निधि:** (थोड़ा दूर हट कर) कोई फायदा नहीं। तुम उसे सिफ जानते ही नहीं, अच्छी तरह से जानते थे। नहीं तो इतना गिल्टी महसूस नहीं करते। पहली बार तुम्हारी मुलाकात उससे कब हुई थी? सरावगीज के यहां से छोड़ने के बाद, या जब उसने नाम बदल कर दूसरी तरह की जिन्दगी शुरू की तब? क्या तुम पिछले बसन्त और गर्मियों में उससे मिलते रहे, जब तुम शायद ही कभी मुझसे मिलने आये और बताया कि तुम बहुत बिज़ी थे? क्या ये सच है? तुम्हारी सूरत ही बता रही है असलियत क्या है।
- सुनीत:** आइ एम सॉरी निधि। पर ये सब तो पिछली गर्मियों में ही खत्म हो गया था। पिछले छह महीने से तो मैंने उसे देखा भी नहीं। मेरा इस आत्महत्या के मामले से कोई वास्ता नहीं है। मैं भी ठीक ये ही सोच रही थी - आधा घंटा पहले।
- सुनीत:** तुम ठीक कहती हो। हममें से कोई भी इसमें शामिल नहीं है, इसलिये खुदा के वास्ते इन्सपैक्टर से कुछ मत कह देना।
- निधि:** तुम्हरे और इस लड़की के बारे में?
- सुनीत:** हां, हम उसे नहीं बतायेंगे।
- निधि:** (पागलों की तरह हंसते हुए) क्यों - कितने बेवकूफ हो तुम - उसे पता है। उसे सचमुच में सब कुछ पता है। और मुझे तो ये सोचना भी अजीब लग रहा है कि उसे कितना कुछ मालूम है जो हम अभी भी नहीं जानते। तुम खुद देख लोगे - देख लोगे तुम...।
- (वो विजयी सी उसकी तरफ देखती है। सुनीत पराजित सा दिखाई देता है। दरवाजा धीरे से खुलता है और इन्सपैक्टर उनकी तरफ धूरता दिखाई देता है। इन्सपैक्टर कुछ देर तक दरवाजे पर खड़ा हो कर निधि और सुनीत को देखता रहता है, फिर दरवाजा खुला छोड़ कर आगे आ जाता है।)
- शैलेश:** (सुनीत से) तो फिर ?
- निधि:** (पागलों की तरह हंसते हुए, सुनीत से) देखा ? क्या कहा था मैंने?
- शैलेश:** क्या कहा था तुमने?
- सुनीत:** (कोशिश करते हुए) इन्सपैक्टर, मेरे स्थाल से अब निधि को इस अदालती सवाल-जवाब से छुटकारा मिल जाना चाहिये। आपको और कुछ बताने के लिये अब इनके पास कुछ नहीं बचा है। आप तो जानते हैं हम लोग आज अपनी ऐनोज़मैन्ट सेलिब्रेट कर रहे थे जिसके उत्साह और चहल-पहल ने इन्हें थका डाला है। अब ये सब इनकी बर्दाशत के बाहर है। आपने देख ही लिया है।
- निधि:** इन्हें डर है मैं कहीं पागल न हो जाऊं।
- शैलेश:** क्या आपको भी ऐसा लग रहा है?
- निधि:** शायद।
- शैलेश:** ठीक है, अब मैं आपको और रोकना भी नहीं चाहता क्योंकि अब मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना।
- निधि:** लेकिन अभी आपके सवाल तो खत्म नहीं हुए न?
- शैलेश:** नहीं।
- निधि:** (सुनीत से) देखा? (इन्सपैक्टर से) फिर मैं रुक रही हूं।
- सुनीत:** तुम क्यों रुक रही हो? इससे तुम और ज्यादा परेशान हो जाओगी।
- शैलेश:** और आपको लगता है कि जवान लड़कियों को परेशानों से बचाया जाना चाहिये।
- सुनीत:** जहां तक हो सके - हां।
- शैलेश:** खैर हम एक ऐसी जवान लड़की को जानते हैं जिसे बचाया नहीं गया। क्यों?

- सुनीतः** मेरा तो कुछ भी कहना मुश्किल हो गया है।
निधिः सुनीत ध्यान रखना, कहीं और मुसीबत में न पड़ जाओ।
- सुनीतः** मैं तो तुमसे सिफ ये कहना चाहता था कि जब तुम्हें इस सबसे नफरत है तो क्यों रुक रही हो?
निधिः मेरे ख्याल से मेरे साथ इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता। बल्कि हो सकता है इसमें कुछ भलाई की बात ही हो।
- सुनीतः** (तल्खी से) ठीक है।
निधिः क्या ठीक है?
- सुनीतः** तुम तो इस झांझट से निकल चुकी हो और अब चाहती हो कि कोई और उसमें फस जाये।
निधिः (कड़वाहट से) तो तुम मुझे इस तरह की लड़की समझते हो। अच्छा हुआ मुझे समय रहते पता चल गया सुनीत।
- सुनीतः** मेरा ये मतलब नहीं था। मैं तो...
निधिः (बीच में ही काट कर) हां, हां, ये ही मतलब था। अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करते होते तो तुम ऐसा हरगिज नहीं कहते। तुमने मेरी पूरी कहानी सुनी और ये सोचा कि मैं कितनी नीच और मतलबी लड़की हूं।
- सुनीतः** न तो मैंने ये कहा है और न ही मैंने ऐसा सोचा है।
निधिः तो ये क्यों कहा कि मैं किसी और को फसाना चाहती हूं? मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकती।
- सुनीतः** अच्छा, अब माफ भी कर दो।
निधिः वो तो ठीक है पर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है। ऐसे वक्त पर तुम्हारी ये बात मुझे हर्ट कर रही है।
- शैलेशः** (स्थिति को अपने हाथ में लेते हुए) रुकिये निधि जी। (सुनीत से) मैं आपको बता सकता हूं कि ये यहां क्या रुकना चाह रही हैं और उस मरने वाली सुन्दर और चंचल लड़की के बारे में सब कुछ सुनना इनके लिये किस तरह अच्छा हो सकता है।
- निधिः** (दुखी हो कर) प्लीज़, और कुछ मत कहिये। मैं जानती हूं और इसे भूल भी नहीं सकती...
शैलेशः (उस पर ध्यान न देते हुए) निधि जी को ये समझ में आगया है कि इन्होंने उस लड़की के साथ क्या किया। वो अपने आपको इसके लिये जिम्मेदार समझ रही हैं। और अगर अब वो बिना सुने यहां से चली जाती हैं तो ये अपने आपको पूरी तरह से दोषी मानेंगी और अकेले ही अपने अपराध बोध से जूझती रहगी - आज रात, कल रात और फिर अगली रात...
निधिः (एकदम से) बिल्कुल ठीक। मैं जानती हूं मैं कुसूरवार हूं जिसके लिये मुझे बहुत अफसोस है। पर मैं ये विश्वास नहीं कर सकती और न ही करूँगी कि सिफ मेरी ही वजह से उसने आत्महत्या कर ली। उफ !!
- शैलेशः** (दोनों को गुस्से से) देखो, कुछ तो शेयर करना ही होगा। और कुछ नहीं तो कुसूर तो शेयर करना ही होगा।
निधिः (उसकी तरफ देखते हुए) जी, बिल्कुल ठीक। (खोई हुई सी इन्सपैक्टर के पास जाती है) मैं आपको समझ नहीं पा रही हूं।
शैलेशः (शान्ति से) समझने की ऐसी कोई जरूरत भी नहीं है।
(शान्ति से उसे अपनी ओर शंका भरी नज़रों से देखते हुए देखता है। कामिनी का पूरे विश्वास के साथ प्रवेश, जैसे उसे इस सबसे कोई मतलब नहीं। निधि इस भाव को एकदम समझ जाती है।)
- कामिनीः** (मुस्कुराते हुए) गुड ईविनिंग इन्सपैक्टर।

- शैलेशः गुड ईवनिंग मैडम।
- कामिनीः (उसी तरह से) मैं मिसिज़ सुराणा हूं। मेरे हसबैन्ड ने मुझे अभी - अभी आपके आने का कारण बताया। आप जो कुछ जाना चाहते हैं, अगर हम बता सकें तो हमें खुशी होगी, पर मुझे लगता नहीं कि हम आपकी ज्यादा मदद कर सकेंगे।
- निधिः नहीं, ममा प्लीज़।
- कामिनीः (बहुत हैरानी से) मैं जानती हूं, ये बेवकूफो हैं...
- निधिः क्या ?
- कामिनीः (संकेच स) मैं अच्छी तरह जानती हूं, ये बेवकूफो हैं।
- निधिः आप गलत कह रही हैं। बल्कि मुझे डर है, आप कुछ ऐसा कह देंगी या कर डालेंगी जिसके लिये आपको बाद में बहुत अफसोस होगा।
- कामिनीः मुझे समझ में नहीं आ रहा निधि, तुम किस बारे में बात कर रही हो?
- निधिः हम सबने भी इसी तरह हंसते हुए और पूरे विश्वास के साथ बात शुरू की थी लेकिन ये तब तक ही चला जब तक इन्होंने सवाल पूछने शुरू नहीं किया थे। (कामिनी पहले निधि को फिर इन्सपैक्टर को देखती है।)
- कामिनीः लगता है आपने इस बच्ची के दिमाग पर कुछ ज्यादा ही असर कर दिया है।
- शैलेशः (शांत भाव से) हां, अक्सर हमें बच्चों के साथ ऐसा करना ही पड़ता है। उन पर असर ज़रा जल्दी हो जाता है।
- (इन्सपैक्टर और कामिनी एक दूसरे को थोड़ी देर देखते हैं फिर कामिनी निधि की तरफ मुड़ जाती है।)
- कामिनीः तुम कुछ थकी सी लग रही हो। अब तुम्हें जा कर सो जाना चाहिये। इन बेतुकी बातों को दिमाग से निकाल दो, सुबह तक ठीक हो जाओगी।
- निधिः नहीं ममा, मैं नहीं जा सकती। मेरे लिये इससे बुरा और क्या हो सकता है। मैं यहां से तब तक नहीं जाऊंगी जब तक मुझे ये पता नहीं चल जाता कि उस लड़की ने अपना आप को क्यों खत्म कर लिया।
- कामिनीः अरे कुछ नहीं, ऐसे ही बेवकूफो की और क्या।
- निधिः नहीं, ऐसा नहीं ह।
- कामिनीः मेरी बात को इस तरह मत काटो। और वैसे भी हमारे लिये ये जानना ज़रूरी नहीं है कि उस लड़की ने आत्महत्या क्यों की। उस क्लास की लड़कियां...
- निधिः (एकदम से बात काटते हुए) ममा, ये मत कहो प्लीज़। अपनी और हमारी भलाई के लिये ऐसा मत...
- कामिनीः (गुस्से से) मत कहो क्या होता है? निधि, तुम भी बस।
- निधिः (धीरे और सावधानी से) आप हमारे और उस लड़की के बीच ये क्लास की दीवार मत खड़ी कीजिये। और अगर आप ऐसा करती हैं तो ये उसे तोड़ देंगे। ये फिर और भी बुरा होगा।
- कामिनीः मुझ कुछ समझ में नहीं आ रहा तुम क्या कह रही हो? (इन्सपैक्टर स) आपको कुछ समझ में आ रहा है?
- शैलेशः हां, ये बिल्कुल ठीक कह रही हैं।
- कामिनीः माफ कीजिये, क्या कहा आपने?
- शैलेशः (साफ शब्दों में) मैंने कहा - हां मैं इन्हें समझता हूं और ये बिल्कुल ठीक कह रही हैं।
- कामिनीः पर मुझे लगता है ये बात इतनी महत्वपूर्ण तो नहीं है। (निधि थोड़ी देर पागलों की तरह हंसती है।) निधि, अब क्या हुआ तुम्हें?
- निधिः पता नहीं। शायद 'महत्वपूर्ण' शब्द पर हंसी आ गई।
- कामिनीः फिर भी...

- निधि:** इससे पहले कि बहुत देर हो जाये, बेहतर है आप चुप हो जायें ममा।
- कामिनी:** शायद तुम्हें लगता है इन्सपैक्टर बुरा मान जायेंगे।
- शैलेश:** 'बुरा माना', इस शब्द को छोड़ ही दिया जाये तो बेहतर होगा।
- सुनीत:** मेरा भी ये ही ख्याल है।
- निधि:** मुझे भी ऐसा ही लगता है।
- कामिनी:** तुम लोग ज़रा चुप रहो और मुझे इन्सपैक्टर से बात करने दो। (पूरे रैब के साथ) ये ठीक है कि आपको कुछ इन्कायरी करनी है पर आप बहुत बेहूदा तरीके से पेश आ रहे हैं। आप शायद जानते नहीं मेरे हसबैन्ड दो साल पहले नगर निगम के चेयरमैन थे और अभी भी उनका असर कम नहीं हुआ है।
- सुनीत:** (बेसब्री से) मम्मी जी इन्सपैक्टर को ये सब मालूम है। उन्हें फिर से याद दिलाना कोई अच्छा ख्याल नहीं है...
- निधि:** (बात काटते हुए) ओह इट्रस क्रेज़ी, ममा अब बन्द करो इसे प्लीज़ !
- शैलेश:** (बेअसर, उसी शान्त भाव से) तो आप मिस्टर सुराणा के बारे क्या कह रही हैं?
- कामिनी:** वो अभी आ रहे हैं। वो मेरे बेटे आलोक से बात कर रहा है जिसके सिर पर आज पागलपन सवार है।
- शैलेश:** क्या हुआ है उसे?
- कामिनी:** आलोक को? शायद उसने अज कुछ ज्यादा ही पी ली है। एकचुअली हम एक पार्टी सेलिब्रेट कर रहा थे...
- शैलेश:** (बात काट कर) क्या उसे पीने की आदत नहीं है?
- कामिनी:** बिल्कुल नहीं, अभी बच्चा ही तो है।
- निधि:** जी नहीं, वो एक जवान लड़का है और कुछ जवान लड़के जोश जोश में बहुत ज्यादा पी लेते हैं। आलोक उन्हीं में से एक है।
- कामिनी:** (गुस्से से) निधि।
- निधि:** (जल्दी से) बेचारे आलोक को मैं किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती। वो शायद पहले से ही मुसीबत म है। पर इस वक्त झूठ नहीं बोलना चाहिये कि आलोक को पीने की आदत नहीं है। वो पिछले दो साल से बहुत ज्यादा पी रहा है।
- कामिनी:** (हैरान हो कर) बिल्कुल गलत। सुनीत, तुम तो उसे जानते हो। तुम खुद एक लड़के हो, तुम्हें तो पता होगा कि ये ज्यादा पीने वाली बात सरासर गलत है।
- शैलेश:** (सुनीत को हिचकिचाते देख कर) क्यों मिसिज़ सुराणा?
- सुनीत:** (कामिनी से माफी मांगते हुए स्वर में) माफ कीजिये लेकिन सच ये ही है। वैसे मैंने उसे घर से बाहर ज्यादा देखा नहीं है। पर हां, मुझे ये ज़रूर पता चला है कि वा बहुत ज्यादा पीता है।
- कामिनी:** (रुष्ट हो कर) और तुम्हें ये वक्त मिला मुझे बताने का?
- निधि:** हां बिल्कुल। उस क्लास डिफरैन्स की दीवार से मेरा ये ही मतलब था। ये सह पाना बहुत मुश्किल है।
- कामिनी:** इन्सपैक्टर की बजाय ये बात तुम कह रही हो?
- निधि:** आपको दिखलाई नहीं पड़ रहा क्या? उन्होंने तो अभी आपसे बात करना शुरू भी नहीं किया है।
- कामिनी:** (थोड़ी संयत होते हुए) अगर ज़रूरत हुई तो मैं खुशी से उन सब सवालों का जवाब देंगी जो इन्सपैक्टर मुझसे पूछना चाहते हैं। वैसे मैं उस लड़की के बारे में कुछ नहीं जानतो।
- शैलेश:** (गंभीर स्वर में) ठीक है मिसिज़ सुराणा, वक्त आने पर देख लेंगे।

शशिकान्तः: (कुछ गुस्से में) मैं कब से आलोक से कह रहा हूं कि जा कर सो जाये पर वो मानता ही नहीं। कह रहा है कि आपने ही उसे यहां रहने के लिये कहा है। आपने ऐसा कहा है क्या उससे? हां, मैंने कहा है।

शैलेशः क्या मैं जान सकता हूं, क्यों?

शशिकान्तः मिस्टर सुराणा, इसलिये क्योंकि मुझे उनसे बात करनी पड़ेगी।

शशिकान्तः मैं नहीं समझता आपको उससे बात करने की ज़रूरत है। पर अगर आपको बात करनी ही है तो आप उससे अभी बात कर लोजिये। उसे अन्दर बुला लीजिये और बात खत्म करके जाने दीजिये।

शैलेशः नहीं, मैं अभी ऐसा नहीं कर सकता। सर्वी, उसे रुकना पड़ेगा।

शशिकान्तः पर देखिये इन्सपैक्टर...

शैलेशः (आदेशात्मक स्वर में डांटते हुए) मेरे काम में इन्टरफोयर करने की कोशिश मत करिये। उसे अपनी बारी का इन्तज़ार करना ही होगा। समझे आप?

(सब लोग एकदम मूर्तियों की तरह हतप्रभ रह जाते हैं।)

अंधकार

Sound Effect & Music

मध्यान्तर

अंक - दो

Music

(स्थितियां पिछले अंक जैसी ही ह)

शैलेश: (आदेशात्मक स्वर में) मेरे काम में इन्टरफोयर करने को कोशिश मत करिये। उसे अपनी बारी का इन्तज़ार करना ही होगा। समझे आप?

(सब लोग एकदम मूर्तियों की तरह हतप्रभ रह जाते हैं। थोड़ी देर के अन्तराल के पश्चात)

(कामिनी से) देखा आपने?

Sound Effect

निधि: नहीं, मैंने कुछ नहीं देखा, और निधि, तुम्हें बोलने की कोई ज़रूरत नहा ह।

कामिनी: (गुस्से से) इन्सपैक्टर, मैं आपको पहले ही कह चुका हूं कि मुझे आपका बात करने और पूछताछ करने का तरीका बिल्कुल पसन्द नहीं और अब मैं आपको और छूट नहीं दे सकता।

शैलेश: आपको मुझे छूट देने की कोई ज़रूरत नहीं।

निधि: (ज़ंगलीपन से हसते हुए) नहीं, छूट तो ये हमें दे रहे हैं ताकि हम खुद ही खत्म हो जायें।

शशिकान्त: (कामिनी से) इसको क्या हुआ है?

कामिनी: ओवर-एक्साइटमैन्ट, जाने के लिये मान नहीं रही है। (गुस्से से इन्सपैक्टर से) अब आप सीधी तरह से बता दीजिये आप क्या जानना चाहते हैं?

शैलेश: (शान्ति से) पिछले साल इस लड़की शिवानी को सरावणीज्ञ से निकाला गया था क्योंकि निधि जी ने उन्हें ऐसा करने को मजबूर किया, और तब उसने नौकरी ढूँढ़ते समय अपना नाम श्रीया रख लिया। (तेजी से सुनीत की तरफ मुड़ते हुए) मिस्टर कोठारी, आप सबसे पहले उसे कब मिले ते? (शशिकान्त और कामिनी उसे हैरानी से देखते हैं।)

आपको किसने कहा कि मैं उसे जानता था?

सुनीत: सुनीत, अब कोई फायदा नहीं, तुम बेकार में वक्त बरबाद कर रहे हो।

शैलेश: जैसे ही मैंने श्रीया नाम लिया उसी वक्त मझे पता चल गया था कि तुम उसे जानते थे। तुमने खुद अपनी पोल खोल दी।

(कड़वाहट से) हां, बिल्कुल... ये उसे जानते थे।

शैलेश: किसी तरह से मुझे ये पहले ही पता चल गया था। तुम उसे सबसे पहले कब और कहां मिले थे?

सुनीत: ठीक है, अगर आप जानना ही चाहते हैं तो सुनिये। मैं उसे पिछले साल मार्च के महीने में मिला था। मैंने उसे सबसे पहले स्टेच्यू सर्किल के पार्क में देखा था।

निधि: हां-हां हम जानते हैं कि राज भवन में तो मिल नहीं सकते थे।

सुनीत: (निधि से) थैन्क्स। तुम मेरी बहुत मदद करोगी, ये तो मैं देख ही रहा हूं। तुम अपनी बात कह चुकी हो और मेरी बात तुम्हें पसन्द नहीं आयेगी, इसलिये बेहतर होगा तुम हमें बात करने दो। अब मेरा इरादा कोई नहीं बदल सकता। मैं अच्छी तरह से समझना चाहती हूं कि एक आदमी का अपनी प्रेमिका से ये कहने का अर्थ क्या हो सकता है कि वो काम में इतना बिज़ी है कि उसके पास अपनी प्रेमिका के लिये भी वक्त नहीं है।

शैलेश: (निर्देशात्मक स्वर में) हां तो मिस्टर कोठारी आप बता रहे थे कि आप उसे स्टेच्यू सर्किल के पार्क में मिले थे।

सुनीत: एक रात मैं बहुत ही बोरिंग दिन बिताने के बाद यूं ही स्टेच्यू सर्किल चला गया था। आम तौर पर औरतें वहां जाना काफ़े पसन्द करती हैं।

कामिनी: औरतें ?

शशिकान्तः: हां, हां। पर मुझे इस सब बात की कोई तुक नज़र नहीं आ रही है - खास तौर से जब ... (निधि की ओर इशारा करते हुए)

कामिनीः: मेरे स्थाल से अगर निधि ये सब न सुने तो बेहतर होगा।

निधिः: पर शायद आप ये भूल रही हैं कि इसी कहानी के हीरो से मेरी सगाई हो चुकी है। (व्यांगात्मक मुस्कुराहट के साथ) बोलो सुनीत कोठारी, तो तुम स्टेच्यू सर्किल गये जहां आम तौर पर औरतें जाना काफो पसन्द करती हैं।

सुनीतः: मुझे खुशी है कि मेरी बात पर आप मुस्कुराई तो सही -

शैलेशः: (तेजी से) मिस्टर कोठारी, फिर क्या हुआ?

सुनीतः: मेरा वहां ज्यादा देर रुकने का इरादा नहीं था। मुझे तो वैसे ही उन लिपी पुती औरतों से नफरत है। पर तभी मुझे एक लड़की नज़र आई जो उन सबसे अलग सीधी और बहुत सुन्दर थी - सुन्दर काले बाल और बड़ी-बड़ी काली आंखें - (एकदम से बात रोक देता है) हे भगवान !

शैलेशः: क्या हुआ ?

सुनीतः: (दुखी स्वर में) माफ कीजिये, मुझे अचानक महसूस हुआ कि वो तो मर चुकी है।

शैलेशः: हां, मर चुकी है।

निधिः: शायद हम लोगों ने मार डाला।

कामिनीः: (गुस्से से) अपनी ज़बान बन्द रखो, निधि।

निधिः: रुको ममा।

शैलेशः: (सुनीत से) हां, आगे ?

सुनीतः: वो बहुत सुन्दर, जवान और दूसरों से अलग-थलग दिख रही ती। बदमाश गनपत उसे अकेली पाकर उसके साथ बदतमीज़ी कर रहा था -

कामिनीः: (बात काटते हुए) इतना विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं है। और तुम उस मवाली गनपत दादा की बात कर रहे हो क्या ?

सुनीतः: हां, उसी की बात कर रहा हूं। वो जयपुर का माना हुआ गुण्डा और हिस्ट्रीशीटर है। और पोलिटिकल पार्टियों का लाड़ला भी है।

शैलेशः: बिल्कुल ठीक।

कामिनीः: (हैरान हो कर) सचमुच ? गनपत दादा। आज रात तो पता नहीं क्या क्या पता चलेगा ?

निधिः: (शान्ति से) हां सचमुच। उस गुण्डे के बारे में तो सब जानते हैं। हमारे कॉलेज की एक लड़की एक दिन दोपहर किसो काम से यूनियन ऑफिस में चली गई जहां वो मौजूद था। बड़ी मुश्किल से फटे हुए कपड़ों में बच कर भागी -

शशिकान्तः: (एकदम चौंक कर) निधि !

शैलेशः: (सुनीत से) आगे ?

सुनीतः: लड़की ने मुसीबत भांप कर मेरी तरफ ऐसा देखा जैसा चीख कर कह रही हो 'मेरी मदद करो'। मैं गनपत के पास गया और उसे इधर-उधर की बातों में बहकाने लगा - कहा कि उससे कोई मिलना चाहता है वगैराह, वगैराह। बड़ी मुश्किल से उसे वहां से टाला। उसके बाद मैंने उस लड़की से कहा कि अगर उसे ये सब पसन्द नहीं है तो मैं उसे इस हालत से बाहर निकलने में मदद कर सकता हूं। वो एकदम से तैयार हो गई।

शैलेशः: फिर आप लोग कहां गये ?

सुनीतः: वहां से हम पास में ही पार्क व्यू होटल चले गये। वहां हमने कुछ ड्रिन्क्स लिये और यूं ही बातें करने लगे।

शैलेशः: यानि शराब पी। क्या उसने बहुत ज्यादा पी लो थी ?

- सुनीतः** नहीं, उसने शायद सदर्में से उबरने के लिये थोड़ी सी बीयर ली थी। वो सिफ थोड़ी सी दोस्ती चाहती थी, बात करने के लिये। मुझे लगा वो गनपत की हरकतों से बहुत ज्यादा डर गई थी।
- शैलेशः** उसने अपने बारे में भी कोई बात की?
- सुनीतः** हां, मैंने उसके बारे में पूछा था। उसने अपना नाम श्रीया बताया था। वो अनाथ थी और किसी दूसरे शहर से आई थी। उसने मुझे ये भी बताया कि उसने पहले एक फ़क्ट्री में काम किया था जो कि उसे हडताल की वजह से छोड़ना पड़ा। उसने दुकान का भी कुछ ज़िक्र किया था पर बताया नहीं कौन सी। शायद वो जानबूझ कर कुछ छुपा रही थी। मैं उसके पास्ट के बारे में सारी जानकारी हासिल नहीं कर सका। मुझे एक हमदर्द समझ कर वो सिफ अपने बारे में बात करना चाहती थी, पर श्रीया ही बने रहना चाहती थी, न कि शिवानी। असल में शिवानी नाम तो मैंने आज पहली बार सुना है। बातों ही बातों में न चाहते हुए भी उसने साफ कर दिया कि उन दिनों वो बेकार थी और उस वक्त भूखी भी थी। मैंने होटल में कुछ खाने का इन्तज़ाम करवाया।
- शैलेशः** उसके बाद तुमने उसे अपनी रखैल बना कर रखने का निश्चय कर लिया ?
- कामिनीः** क्या ?
- निधिः** बिल्कुल ममा। ये तो शुरू से ही साफ था। आगे बोलो सुनीत, ममा की परवाह मत करो।
- (धीरे-धीरे) उस रात तो नहीं, बल्कि दो रातों के बाद मुझे पता चला - इस बार अचानक नहीं। ऐसा हुआ कि मेरे एक दोस्त ने जो कि जयपुर से बाहर गया हुआ था, अपने घर की चाबी मुझे दे दी थी, घर की देखभाल के लिये। मैंने श्रीया को कहा कि फिलहाल वो उस घर में रहे और उसे कुछ पैसे भी दे दिये, खर्चे के लिये। (इन्सपैक्टर से सावधानी पूर्वक) मैं सच कह रहा हूं मैंने उसे वहां किसी बुरी नीयत से नहीं रखा था। मैंने उसे वहां सिफ इसलिये भेजा था क्योंकि मुझे उस पर दया आ गई थी। मैं नहीं चाहता था वो फिर से स्टेच्यू सर्किल या किसी और पार्क में धक्के खाये। मैंने उससे बदले में कुछ नहीं मांगा था।
- शैलेशः** हूं...
- निधिः** ये सब तुम इन्हें क्यों बता रहे हो, मुझे क्यों नहीं बताया ?
- सुनीतः** हां, बताना तो चाहिये था। सॉरी निधि, पर मैं...
- निधिः** (उसे हिचकिचाते हुए देख बात काट कर) मैं जानती हूं ये तुम्हें मजबूर कर रहे हैं।
- शैलेशः** लेकिन वो तुम्हारी रखैल बन गई?
- सुनीतः** आप ऐसा कह सकते हैं। उसमें कोई परेशानी नहीं हुई। वो सन्दर, जवान और गर्म जोशा थी और उतनी ही मेरी एहसानमंद थी। मैं उसके लिये अचानक बहुत महत्वपूर्ण आदमी हो गया था - आप समझ रहे हैं न?
- शैलेशः** हां, वो औरत थी और अकेली भी थी। क्या तुम उसे प्यार करते थे?
- निधिः** ये ही मैं भी पूछने वाली थी।
- शाशिकान्तः** (गुस्से से) अब मुझे बोलना ही होगा।
- शैलेशः** (तेजी से शाशिकान्त की ओर धूम कर) आपको क्या एतराज़ है? सबसे पहले तो आप ही ने उसे काम से निकाला था।
- शाशिकान्तः** (हैरानी से) उस हालत में सभी ये ही करते। मुझे एतराज़ इस बात से है कि आप बेवजह मेरी जवान बेटी को इस मामले में घसीट रहे हैं...
- शैलेशः** (तीखेपन के साथ) आपकी बेटी कोई आसमान से नहीं उतरी है। वो भी इसी धरती पर रहती है।
- निधिः** हां, और मेरे ही कारण उस लड़की को काम से निकाला गया। सुनीत से मेरी सगाई हो चुकी है, मैं कोई बच्ची नहीं हूं, आपको इसका ध्यान रखना चाहिये। मुझे ये जानने का पूरा हक्क है।
- सुनीत, क्या तुम उससे प्यार करते थे?

- सुनीतः** (हिचकिचाते हुए) ये कहना तो मुश्किल है। मैंने उसके बारे में उस तरह से नहीं सोचा था जैसा वो मेरे बारे में सोचती थी।
- निधिः** (तीखे व्यंग से) हां-हां क्या नहीं। तुम सपनों के राजकुमार हो। तुम तो खुश हो रहे होगे?
- सुनीतः** (बचाव की मुद्रा में) कुछ समय ऐसा रहा। किसी भी आदमी के साथ ऐसा हो सकता है। शायद ज़िन्दगी में तुमने आज की रात पहली बार कोई अच्छी बात की है। कम से कम इसमें सच्चाई तो है। क्या तुम उससे हर रात मिलने जाते थे?
- सुनीतः** नहीं। वैसे मैं तुमसे झूठ नहीं बोलता था कि मैं बिज़ी हूं। मैं सचमुच बिज़ी था। पर ये भी मानता हूं कि उससे आमतौर पर मिलता रहता था।
- कामिनीः** मुझे लगता है अब इन सब बातों को जानने की कोई ज़रूरत नहीं है ...
- निधिः** (बात काटते हुए) मुझे ज़रूरत है। अभी सारी बात का पता भी नहीं चला है।
- सुनीतः** और पता चलेगा भी नहीं। (कामिनी) आप जानती हैं कि ये बेकार की बातें नहीं हैं।
- कामिनीः** मेरे लिये तो बेकार ही हैं।
- सुनीतः** (इन्सपैक्टर से) आप और कुछ जानना चाहते हैं?
- शैलेशः** हां, इस अफ़्यर का अन्त कैसे हुआ?
- सुनीतः** सितम्बर का फर्स्ट वीक था। कुछ हफ्तों के लिये मुझे बाहर जाना पड़ गया था। तब तक श्रीया भी समझ चुकी थी कि सब कुछ तकरीबन खत्म हो चुका है। इसलिये जाने से पहले मैंने उस संबंध को पूरी तरह तोड़ दिया।
- शैलेशः** उस पर इसका क्या असर हुआ?
- सुनीतः** मेरी आशा से उल्टा। वो बहुत खुश थी।
- निधिः** (व्यंग से) हां, तुम्हरे लिये तो अच्छा ही था।
- सुनीतः** नहीं ऐसा कुछ भी नहीं था। (थोड़ी देर बाद परेशान स्वर में) उसने मुझे बताया कि वो पहले से बहुत खुश थी। उसे मालूम ही था कि ये सब ज्यादा देर नहीं चल सकता। उसने मुझ पर कोई इल्जाम नहीं लगाया। काश, मुझ पर इल्जाम लगाती तो मुझे ज्यादा खुशी होती।
- शैलेशः** क्या उसे वो घर छोड़ना पड़ा?
- सुनीतः** हां, हमने उस बारे में बात कर ली थी। मैं उसे जो पैसे देता था उन्हें कायदे से खर्च कर उसने कुछ पैसे बचा लिये थे हालांकि वो बहुत ज्यादा भी नहीं थे। ज्यादा से ज्यादा एक साल का गुजारा हो सकता था। मैं जाते समय उसे कुछ अच्छा अमाउन्ट गिफ्ट करना चाहता था पर उसने लेने से इन्कार कर दिया।
- शैलेशः** उसने तुम्हें कुछ बताया कि वो बाद में क्या करना चाहती थी?
- सुनीतः** नहीं, वो इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहती थी। एक-दो बार बातों - बातों में मुझे लगा कि वो ये शहर छोड़ देना चाहती है। पर मुझे पता नहीं उसने छोड़ा या नहीं। आपको कुछ पता है?
- शैलेशः** हां, करीब दो-तीन महीनों के लिये किसी हिल स्टेशन चली गई थी।
- सुनीतः** अकेली ही?
- शैलेशः** हां, मेरे रूद्धाल से वो अकेली रह कर उन सभी बातों के बारे में सोचना चाहती थी जो तुम दोनों के बीच रहीं।
- सुनीतः** ये आपको कैसे मालूम?
- शैलेशः** उसने एक डायरी सी बना रखी थी जिसमें उसने ऐसा ज़िक्र किया था। उसे लगता था कि इससे अच्छे दिन उसकी ज़िन्दगी में फिर नहीं आ सकते थे इसलिये वो उन दिनों की याद को अपने पास हमेशा के लिये बचा कर रखना चाहती थी।

- सुनीतः (गम्भीर स्वर म) हूं...! मैं उससे बाद में कभी नहीं मिल पाया। इसके अलावा मेरे पास बताने को और कुछ है भी नहीं।
- शैलेशः बस, मैं आपसे इतना ही जानना चाहता था।
- सुनीतः इन सब बातों ने मुझे बहुत अपसैट कर दिया है। मैं कुछ देर अकेला रहना चाहता हूं, अगर आप मुझे जाने दें तो...
- शैलेशः कहां जायेंगे, घर?
- सुनीतः नहीं, पर आपको एतराज्ज न हो तो कुछ देर बाहर जाकर धूमना चाहता हूं। मैं वापस आ जाऊंगा।
- शैलेशः ठीक है मिस्टर कोठारी।
- निधि: सुनीत, हो सकता है कि तुम भूल जाओ या वापस न आओ, इसलिये मेरे स्वाल से तुम ये अभी ले जाओ। (उसे अंगूठी वापस दे देती है)
- सुनीतः (दुखी हो कर) ये तो होना ही था।
- निधि: Music
- मुझे तुमसे अब कोई शिकायत नहीं है। पता नहीं क्यों मेरे दिल में तुम्हारे लिये इज्जत उभर रही है। पिछले साल तुम मुझसे झूठ बोल कर बचते रहे। मुझे लग रहा था कि कुछ गड़बड़ है। पर आज कम से कम तुम सच तो बोले। जिस तरह से तुमने उस लड़की की मदद की मुझे यकीन है तुम्हें उस पर दया आ गई थी। जब तुम उससे पहली बार मिले, वो मेरी ही वजह से निराश थी। लेकिन फिर भी कहीं कुछ बदल गया है। मैं और तुम अब वो नहीं रहे जो इस पार्टी से पहले थे। हमें शायद एक नये सिरे से शुरूआत करनी होगी। एक दूसरे के बारे में फिर से जानना होगा...
- शाशिकान्तः निधि, मैं उसका पक्ष नहीं ले रहा, पर तुम्हें समझना चाहिये कि इस तरह बहुत से...
- निधि: पापा, आप इन्टरफोयर मत कीजिये प्लीज़, सुनीत जानता है मैं क्या कह रही हूं। शायद आप नहीं जानते।
- सुनीतः हां, मुझे तुम्हारा मतलब समझ में आ गया है। पर मैं वापस आ रहा हूं - आ सकता हूं ?
- निधि: हां। Music
- कामिनीः कुछ समझ में नहीं आ रहा। मेरे स्वाल से ये बकवास खत्म हो चुकी है। अब इस बारे में बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है।
- सुनीतः मुझे ऐसा नहीं लगता, माफ कीजिये। (बाहर चला जाता है। सब उसे चुपचाप जाते हुए देखते हैं। बाहर का दरवाज़ा बन्द करने की आवाज आती है।)
- निधि: (इन्सपैक्टर स) आपने उसे उसकी फोटो नहीं दिखाई?
- शैलेशः ज़रूरी नहीं थी। शायद अच्छा ही हुआ।
- कामिनीः क्या आपके पास उस लड़की की फोटो है?
- शैलेशः हां, देख लें तो अच्छा ही रहेगा।
- कामिनीः क्यों मुझे क्यों देखना चाहिये?
- शैलेशः पता नहीं, लेकिन देख लें तो अच्छा ही है।
- कामिनीः ठीक है। (वो उसे फोटो देता है। फोटो को थोड़ी देर देखती रहती है।)
- शैलेशः (फोटो वापस ले कर) आपने पहचाना उसे?
- कामिनीः नहीं, मैं कैसे पहचानूँगी?
- शैलेशः हो सकता है हाल ही में उसमें थोड़ा फर्क आ गया हो पर मेरे स्वाल से बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया होगा।
- कामिनीः इन्सपैक्टर, मैं आपका मतलब नहीं समझी।
- शैलेशः मुझे लगता है आप समझना भी नहीं चाहतीं।

- कामिनी: (गुस्से से) मेरे कहने का ये ही मतलब है।
- शैलेश: आप मुझे सच नहीं बता रहीं।
- कामिनी: माफ कीजियेगा, मैं समझी नहीं।
- शाशिकान्त: (क्रोधित हो कर इन्सपैक्टर से) देखिये, मैं और बर्दाशत नहीं कर सकता। आपको अभी माफो मांगनी होगी।
- शैलेश: माफो? पर किसलिये? क्या अपनी ऊँटी के लिये?
- शाशिकान्त: नहीं, अपने व्यवहार के लिये। मैं एक इज्जतदार आदमी हूं।
- शैलेश: (अधिकार पूर्वक) मिस्टर सुराणा, इज्जतदार आदमी की कुछ ज़िम्मेदारियां भी तो होती हैं।
- शाशिकान्त: हो सकता है, लेकिन मेरे स्वाल से आप मुझे मेरी ज़िम्मेदारियां समझाने नहीं आये हैं।
- निधि: ऐसा था तो नहीं पर लगता है इस बारे में सोचना पड़ेगा।
- कामिनी: तुम्हारे कहने का मतलब क्या है निधि?
- निधि: इसका मतलब ये है कि हमें झूठ बोलने या दिखावे की कोई ज़रूरत नहीं ह। पापा ने उसे इसलिये निकाल दिया क्योंकि वो मजदूरी बढ़ाने की बात कर रही थी। मैंने उसे नौकरी से निकलवाकर और परेशान कर दिया क्योंकि मुझे उसकी सुन्दरता पर गुस्सा आ गया था। सुनीत ने उसे रखैल बना लिया और जब चाहा उसे छोड़ दिया। और अब आप ये दिखाने की कोशिश कर रही हैं कि आप उसे पहचानती नहीं हैं। मैं कह नहीं सकती कि आप उसे सचमुच पहचानती हैं या नहीं लेकिन जिस तरह से आपने उसकी पोटो की तरफ देखा मुझे लगा आप उसे पहचानती हैं। और अब आप ही सच नहीं बोल रहीं तो इन्सपैक्टर क्यों आपसे माफो मांगे। आप दोनों को नहीं लगता कि आप मामले को और उलझा रहे हैं। (बाहर का दरवाजा बन्द होने की आवाज आती है)
- शाशिकान्त: दरवाजे पर आवाज कैसी है?
- कामिनी: सुनीत वापस आया होगा।
- शैलेश: शायद आपका लड़का बाहर गया है।
- शाशिकान्त: मैं देखता हूं। (तेजी से बाहर जाता है। इन्सपैक्टर कामिनी की तरफ मुड़ता है।)
- शैलेश: मिसिंज सुराणा, आप तो महिला सेवा संघ की महत्वपूर्ण पदाधिकारी हैं, नहीं?
- (कामिनी कोई जवाब नहीं देती)
- निधि: जवाब दो ममा। वैसे जवाब तो मिल ही गया है। (इन्सपैक्टर से) जी हां, वो हैं। लेकिन आप क्यों जानना चाहते हैं?
- शैलेश: (शांत भाव से) ये एक ऐसा महिला संघ है जिसमें कोई भी पीड़ित औरत किसी तरह की सहायता के लिये अपील कर सकती है। ऐसा ही है न?
- कामिनी: (पूरे सम्मान के साथ) जी। हमने ज़रूरतमंदों के लिये बहुत कुछ किया है।
- शैलेश: दो हफ्ते पहले ही आपकी स्टैंडिना कमैटी की मीटिंग थी?
- कामिनी: जी हां, शायद थी तो।
- शैलेश: मिसिंज सुराणा, आप अच्छी तरह जानती हैं आप उस मीटिंग की चैयर परसन थीं।
- कामिनी: अगर मैं थी भी तो आपको इससे मतलब क्या है?
- शैलेश: आप साफ-साफ सुनना चाहती हैं? (शाशिकान्त का गुस्से में प्रवेश)
- कामिनी: वो ज़रूर आलोक ही होगा।
- शैलेश: (चिन्तित स्वर में) क्या आप उसके कमरे से आ रहे हैं?
- कामिनी: हां, मैंने उसे आवाज भी दी थी। हमने आलोक को ही बाहर जाते सुना था।
- शैलेश: बेवकूफ लड़का। वो जा कहां सकता है?
- कामिनी: पता नहीं, पर कुछ अजीब से उत्तेजित मूड में था। बेशक हमें उसकी यहां ज़रूरत नहीं पर....

शैलेशः (तेजी से बात काटते हुए) हमें उसकी ज़रूरत है। अगर वो जल्दी वापस नहीं आया तो मुझे खुद जा कर उसे ढूँढ़ना पड़ेगा। (शाशिकान्त और कामिनी एक दूसरे को डर कर और हैरानी से देखते हैं।)

निधिः यूं ही बाहर घूमने गया होगा। जल्दी ही आ जायेगा।

शैलेशः (गुस्से में) मुझे भी ये ही आशा है।

कामिनीः आपको ये आशा क्यों है?

शैलेशः मैं आपकी बात का जवाब तब दूँगा जब आप मेरे सवाल का जवाब देंगी मिसिज़ सुराणा।

शशिकान्तः क्या आप बता सकते हैं मेरी पत्नी आपके सवाल का जवाब क्यों देगी?

शैलेशः जी हां, ज़रूर। आपको याद होगा मिस्टर कोठारी ने हमें बताया था जो शायद सच भी था कि वो शिवानी से पिछले साल सितम्बर के बाद नहीं मिले। पर मिसिज़ सुराणा ने शिवानी से दो हफ्ते पहले ही मुलाकात की और बारें भी की हैं।

निधिः (हैरानी से) ममा !

शशिकान्तः क्या ये सच है?

कामिनीः (कुछ अन्तराल के बाद) हां, सच है।

शैलेशः क्या उसने आपके महिला संघ से मदद की अपील की थी?

कामिनीः हां।

शैलेशः शिवानी के नाम से?

कामिनीः नहीं, और न ही श्रीया के नाम से।

शैलेशः फिर किस नाम से?

कामिनीः उसने अपना नाम मिसिज़ सुराणा बताया ...

शशिकान्तः (हैरानी से) मिसिज़ सुराणा ?

कामिनीः हां, इसलिये मुझे लगा कि ये जानबूझ कर बदतमीज़ी की जा रही है। ये ही एक कारण था जिसन मुझे उसके केस से प्रज्युडिस कर दिया।

शशिकान्तः देखा आपने, हद होती है बदतमीज़ी की !

शैलेशः (अप्रभावित) तो आप ये स्वीकार करती हैं कि आप उसके केस से प्रज्युडिस थीं ?

कामिनीः हां।

निधिः ममा ये मत भूलो कि वो बहुत बुरी मौत मरी है।

कामिनीः मुझे इसका अफसोस है पर मेरे ख्याल से इस अंजाम के लिये वो खुद कुसूरवार थी।

शैलेशः क्या आपके महत्वपूर्ण सदस्य होने के नाते उस लड़की को कोई मदद नहीं दी गई?

कामिनीः शायद।

शैलेशः ये आपकी वजह से हुआ या नहीं?

कामिनीः (चोट खाये हुए स्वर में) हां, मेरी वजह से ही हुआ। मुझे उसका व्यवहार पसंद नहीं आया। उसने जानबूझ कर मेरा इस्तमाल किया हालांकि बाद में उसने ये ज़ाहिर करने की कोशिश की कि उसको सबसे पहले ये ही नाम सूझा था। मैंने जब उससे पूछताछ की तो उसकी बताई हुई कहानी कि वो शादीशुदा है और उसके पति ने उसे छोड़ दिया है, वगैराह बिल्कुल झूठी थी। बल्कि उसका इस नाम से भी कोई वास्ता नहीं था। मुझे उससे सच उगलवाने में ज्यादा देर नहीं लगी।

शैलेशः वो किस तरह की मदद चाहती थी?

कामिनीः आप अच्छी तरह जानते हैं उसे किस तरह की मदद चाहिये थी।

शैलेशः नहीं, मैं नहीं जानता क्यों मदद चाहती थी। क्योंकि मैं वहां नहीं था इसलिये मुझे ये भी नहीं मालूम कि आपके संघ से किस तरह की मदद चाहती थी।

Music

- कामिनी:** मुझे नहीं लगता इस पर बहस की कोई ज़रूरत है।
शैलेश: मिसिज़ सुराणा, आप किसी तरह की बहस से बच नहीं सकतों।
कामिनी: अगर आप ये सोच रहे हैं कि आप मुझ पर कोई दवाब डाल सकते हैं तो ग़लती कर रहे हैं। बाकी तीनों की तरह मैंने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे मुझे शार्म महसूस हो या जिसमें किसी तरह की छानबीन की ज़रूरत हो। लड़की सहायता चाहती थी। जो महिलायें हमसे सहायता चाहती हैं उनके केस को हमें ध्यान से देखना पड़ता है। मैं इस लड़की की मांग से संतुष्ट नहीं थी। वो मदद के लिये जेनुइन केस नहीं था इसलिये मैंने मना कर दिया। उसके बाद उसके साथ जो कुछ भी हुआ, उससे मुझे कोई मतलब नहीं है। मैंने तो अपनी छ़ूटी पूरी की थी और अब आगर मैं उस पर बहस नहीं करना चाहती तो आपको कोई हक नहीं है कि आप मुझ पर दवाब डालें।
- शैलेश:** मुझे पूरा हक है।
कामिनी: नहीं, बिल्कुल नहीं। सीधी सी बात है, मैंने कुछ गलत नहीं किया है, ये आप भी जानते हैं।
शैलेश: (जानबूझ कर) मुझे लगता है कि आपने बहुत बड़ी ग़लती की है जिसके लिये आप पूरी ज़िन्दगी अफ़सोस करती रहेंगी। काश उसकी लाश देखते समय आप मेरे साथ होतीं, तब आपको लगता...
निधि: (एकदम फटते हुए) नहीं, अब फिर से शुरू मत कीजिये, प्लीज़। मैं पहले ही बहुत सोच चुकी हूँ इस पर।
- शैलेश:** अब आप ये जान कर फिर से सोचिये कि वो लड़की प्रेग्नेन्ट थी।
- निधि:** (घबरा कर) नहीं, ये नहीं हो सकता। ये तो बहुत भयानक है। उसने आत्महत्या का सोच भी कैसे लिया?
- शैलेश:** क्योंकि उसने एकदम से बहुत सारे उतार-चढ़ाव देख लिये थे। ये ही उसका अन्त था। क्योंकि....
- निधि:** (काट कर) ममा, आपको तो पता ही होगा?
- शैलेश:** क्योंकि वो मां बनने वाली थी इसलिये वो आपकी मम्मी की संस्था के पास मदद लेने गई थी। देखिये इन्सपैक्टर, इसमें सुनीत का कोई हाथ नहीं ...
- शैलेश:** (बात काटते हुए) नहीं, इस बात से सुनीत का कोई लेना-देना नहीं है।
- निधि:** (अनायास ही) शुक्र है भगवान का। (अपने आप से) लेकिन मैं क्यों परवाह करूँ?
- शैलेश:** (कामिनी से) आप के पास मुझे बताने के लिये कुछ भी नहीं है?
- कामिनी:** मैं पहले ही सब कुछ बता चुकी हूँ अब भी ये ही कहूँगी कि जाइये और बच्चे के बाप को तलाश कीजिये। ये उसी की ज़िम्मेदारी है।
- शैलेश:** ये कहने से आपकी ज़िम्मेदारी कम नहीं हो जाती। वो लड़की उस समय पर मदद मांगने आई थी जिस समय कोई भी औरत अपने आपको मजबूर और असहाय महसूस करती है। और आपने उसकी खुब मदद की। आपने तो न सिफ उसको मदद देने से इन्कार कर दिया बल्कि औरें को भी उसकी मदद नहीं करने दी। वो अकेली, बिल्कुल बेरोज़गार, बिना पैसे के, मजबूर थी। उसे सिफ पैसा ही नहीं बल्कि सलाह, सहानुभूति और अपनेपन की ज़रूरत थी। मिसिज़ सुराणा आप खुद भी एक मां हैं। कम से कम आप तो समझ सकती थीं कि उस वक्त उस पर क्या गुज़र रही होगी। और आपने ऐसी हालत में उससे मुंह मोड़ लिया।
- निधि:** (भावुक हो कर) ममा, ये तो उस पर सचमुच अन्याय हुआ है। आप कैसे इतनी ज़्यादाती कर सकीं उस पर?

Music

- शशिकान्तः:** (सशंकित) सुनो, ये सब अगर इन्कायरी में दर्ज हो जाता है तो हम सब मुश्किल में पड़ जायेंगे। तुम्हें तो पता ही है कि प्रैस के लोग कैसे बात का बतांगड़ बना सकते हैं।
- कामिनीः** (परेशान हो कर) प्लीज आप दोनों चुप हो जाओ। मुझ पर इल्जाम लगाने से पहले ये सोच लेना कि मैंने उसे नौकरी से नहीं निकाला जिसकी वजह से सारे हालात बने। (इन्सपैक्टर की तरफ) इस सब को देखते हुए मुझे नहीं लगता मैंने कोई गलती की है। उस लड़की ने शुरू से ले कर आखिरी तक झूठ बोला। बाद में जब मुझे सच पता चला कि वो लड़की पक्के तौर पर जानती थी कि उस बच्चे का बाप कौन था, तो मैंने उससे कहा कि इस बात के लिये वो ही ज़िम्मेदार है।
- शशिकान्तः:** अगर वो शादी के लिये मना करता है तो उसके लिये उसे मजबूर किया जा सकता था। कम से कम उसे इसका खर्चा ता देना ही चाहिये।
- शैलेशः** उसने क्या जवाब दिया?
- कामिनीः** फालतू की बातें करती रही।
- शैलेशः** किस तरह की?
- कामिनीः** पता नहीं क्या-क्या लेकिन मुझसे और बर्दाशत नहीं हो पा रहा था। पता नहीं अपने आप को क्या समझ रही थी। अपनी ओकात भूल कर बढ़-चढ़ कर बातें कर रही थी।
- शैलेशः** (गुस्से से) अब उसकी ये हालत है कि वो एक तख्ते पर बूरी हालत में मरी पड़ी है। (जैसे ही शशिकान्त बोलने की कोशिश करता है इन्सपैक्टर उसकी तरफ मुड़ जाता है) मुझ पर बड़बड़ाने की ज़रूरत नहीं है। आप लोगों को मैं बहुत बर्दाशत कर चुका हूँ। (कामिनी से) क्या कहा था उसने?
- कामिनीः** (डरे हुए स्वर में) उसने कहा कि बच्चे का बाप खुद भी छोटा है, बेवकूफ और शराबी है। उसके साथ शादी का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। ये दोनों के लिये ही बुरा होगा। उसने कुछ पैसे दिये थे, वो और भी देना चाहता था पर उसने और पैसे लेने से इन्कार कर दिया।
- शैलेशः** क्यों?
- कामिनीः** यूँ ही, बेवकूफ जो थी। मुझे उस पर बिल्कुल विश्वास नहीं है।
- शैलेशः** मैं आपसे ये नहीं पूछ रहा कि आपको उस पर विश्वास था या नहीं। मैं सिफ इतना जानना चाहता हूँ कि उसने कहा क्या था। उसने लड़के से और पैसा लेने से इन्कार क्यों कर दिया?
- कामिनीः** अजीब ही ख्यालात थे उसके। ऐसे बन रही थी मानो उसके जैसी लड़कियां कभी किसी से पैसा लेती ही न हों।
- शैलेशः** (गुस्से से) मैं आपको बता दूँ मिसिज सुराणा, आप अपने लिये मुसीबत पैदा कर रही हैं। मुझे ये बताइये कि उसका पैसे न लेने के पीछे कारण क्या था?
- कामिनीः** उसका कहना था कि एक दिन लड़के ने शराब के नशे में उसे ये बताया था कि ये उसका अपना पैसा नहीं है।
- शैलेशः** फिर ये पैसा उसके पास कहां से आया?
- कामिनीः** उसने चोरी किया था।
- शैलेशः** तो वो आपके पास इसलिये आई थी क्यांकि वो चोरी का पैसा नहीं लेना चाहती थी।
- कामिनीः** जब मैंने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया तो उसने मुझे बताया कि वो एक शादी शुदा औरत है जिसे पति ने छोड़ दिया। मुझे उसकी कोई भी बात सच नहीं लग रही थी। इसलिये आप ग़लत सोच रहे हैं कि मुझे अपने किये पर अफसोस होगा।
- शैलेशः** लेकिन अगर उसकी कहानी सच्ची थी और वो इसलिये आपके पास मदद के लिये आई क्योंकि वो उस लड़के को और मुसीबत में नहीं डालना चाहती थी, फिर? ऐसा हो सकता है न?

Music

- कामिनी: हो सकता है, पर मुझे उसकी बात बकवास लग रही थी। मैंन तो अपनी संस्था से उसकी मदद करने से इन्कार करके अच्छा ही किया।
- शैलेश: अभी भी आपको अपने किये पर ज़रा भी अफसोस नहीं है? ये जानते हुए भी कि उस लड़की के साथ क्या हुआ?
- कामिनी: मुझे अफसोस है कि उसका अंत इस तरह हुआ। पर उसके लिये मैं खुद का दोषी नहीं मान सकती।
- शैलेश: फिर किसका दोष है?
- कामिनी: पहले तो लड़की का खुद का ही दोष है।
- निधि: (कड़वाहट स) मेरे और पापा की वजह से उसकी नौकरी चली गई, इसलिये?
- कामिनी: फिर उस लड़के का कुसूर है जो उसके बच्चे का बाप था। अगर वा उसके स्तर का नहीं था, जैसा उसने कहा था और ऐसे ही कोई शराबी कबाबी था, तब भी उसे बिल्कुल नहीं छोड़ना चाहिये था। उसे तो सबक मिलना ही चाहिये। लड़की मरी ही उसकी वजह से।
- मगर उसके पास चोरी का पैसा था...
- कामिनी: (कट कर) ऐसा मानन की कोई तुक नहीं है।
- शैलेश: मान लीजिये, ऐसा है तो?
- कामिनी: तो सारी ज़िम्मेदारी उसी की है। अगर ऐसा नहीं होता तो लड़की हमारे पास मदद मांगने क्यों आती और हम मदद के लिये क्यों मना करते? अगर उसकी वजह से नहीं है तो...
- शैलेश: तो आपके ख्याल से वो ही सबसे बड़ा दोषी है?
- कामिनी: बिल्कुल, उसके साथ सख्ती से पेश आना चाहिये।
- निधि: (घबरा कर) ममा, बस करो।
- शशिकान्त: तुम खामोश रहो निधि।
- निधि: क्या आप देख नहीं रहे?
- कामिनी: (गुस्से में) तुम बिल्कुल पागलों की तरह बात कर रही हो। (निधि रोने लगती है। कामिनी इन्सपैक्टर की तरफ मुड़ कर) यहां बेकार के सवाल-जवाब करने से बेहतर है कि आप उस लड़के को तलाश कीजिये, अपना कुसूर मनवाइये। असल में आपकी ड्यूटी ये ही है।
- शैलेश: (गम्भीर स्वर में) मिसिज़ सुराणा आप चिन्ता मत करिये, मैं अपनी ड्यूटी पूरी तरह निभाऊंगा। (अपनी घड़ी की तरफ देखता है)
- कामिनी: (जीत के स्वर में) मुझे बहुत खुशी हुई ये सुन कर।
- शैलेश: (कोई दबाव नहीं) हूं... उसको सबक सिखाना ही होगा, सबके सामने मनवाना होगा।
- कामिनी: बिल्कुल। अब आप गुड नाइट कीजिये और अपनी ड्यूटी पूरी करने जाइये।
- शैलेश: अभी नहीं, मैं रुकूंगा।
- कामिनी: किसलिये?
- शैलेश: अपनी ड्यूटी पूरी करने के लिये।
- निधि: (दुखी स्वर में) ममा, देख नहीं रही हैं क्या?
- कामिनी: (समझते हुए) मेरा मतलब... क्या वाहियात बात है? (रुक कर अपने पति को डरी हुई नजरों से देखती है)
- शशिकान्त: (बुरी तरह डर कर) इन्सपैक्टर, कहीं आप ये तो नहीं कहना चाहते कि मेरा लड़का इसमें इन्वॉल्व है?
- शैलेश: (सख्ती से) अगर वो है तो आप जानते ही हैं हमें क्या करना है, है न? मिसिज़ सुराणा ने अभी बताया तो है।
- शशिकान्त: (सन्न रह जाता है) माइ गॉड... लेकिन... देखिये...
- कामिनी: (खींज भरे स्वर में) मैं बिल्कुल विश्वास नहीं करूंगी... मैं विश्वास कर ही नहीं सकती।

- निधि:** ममी प्लीज़, मैं हाथ जोड़ कर रही हूँ, बन्द करो ये सब...
- (इन्सपैक्टर एक हाथ उठाता है। बाहर का दरवाज़ा बन्द करने की आवाज़ आती है। सब दरवाज़े की तरफ देखते हैं। आलेक आता है, पीला एवं मुरझाया हुआ चेहरा लिये। उनकी खीजती हुई निगाहों को देखता है। आलोक कमरे के बीच में आ कर खड़ा हो जाता है, बाकी लोग उसे धूर रहे हैं।)
- आलोक:** तो आप लोग जानते हैं।
- शैलेश:** (पहले की तरह) हां, हम जानते हैं। (आलोक दरवाज़ा बन्द करके आगे आता है।)
- कामिनी:** (दुखी स्वर में) आलोक, मुझे विश्वास नहीं होता, ज़रूर कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। तुम नहीं जानते हम लोग क्या बात कर रहे थे।
- निधि:** अच्छा ही है ये नहीं जानता, है ना?
- आलोक:** क्यों?
- निधि:** क्यों कि ममा अभी तक उस लड़के पर ही ब्लेम लगा रही थीं जिसने उसे मुसीबत में डाल दिया और ये भी कह रही थीं कि उस लड़के को छोड़ना नहीं चाहिये, उसे सबक मिलना ही चाहिये। बहुत हो गया निधि।
- आलोक:** (कड़वाहट से) ममी, तुमने बहुत अच्छा नहीं किया मेरे लिये।
- कामिनी:** लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि वो तुम्हीं हो। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकती थी। तुम उस तरह के लड़के हो ही नहीं। तुम तो इतना पीते भी नहीं हो।
- निधि:** वो पीता है, मैंने आपको बताया तो था।
- आलोक:** तूने बताया था?
- निधि:** मैं उन्हें पहले भी बता सकती थी लेकिन मैंने नहीं बताया। मैंने आज रात इसलिये बताया क्योंकि हर बात खुल रही थी। आज या कल तो उन्हें पता लगना ही था इसलिये मैंने सोचा उन्हें पहले ही पता लग जाये। ये मत भूल कि मैं भी ये सब भुगत चुकी हूँ।
- कामिनी:** निधि, तुम्हें हो क्या रहा है, मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आ रहा।
- शशिकान्त:** मुझे भी समझ में नहीं आ रहा। अगर तुम्हरे दिल में घरवालों के लिये थोड़ा भी लिहाज है तो...
- शैलेश:** (बीच में ही काटते हुए) ज़रा एक मिनिट मिसिज़ सुराणा, जब मैं चला जाऊँगा तो आपको घरेलू झगड़े निपटाने का बहुत टाइम मिल जायेगा। पर अब मैं आपके बेटे की बात सुनना चाहूँगा। (सख्ती से) और आप लोगों का आभार मानूँगा अगर आप लोग बीच में टांग न अड़ायें। (आलोक की तरफ मुड़ कर) अब बोलो।
- आलोक:** मैं पहले थोड़ी सी ड्रिंक ले लूँ?
- शशिकान्त:** (तेजी से) नहीं।
- शैलेश:** (मज़बूती से) हां। (जैसे ही शशिकान्त कुछ बोलना चाहता है) मैं जानता हूँ कि वो आपका बेटा है और ये घर भी आपका है, पर ज़रा उसकी तरफ देखिये। इन सब बातों के लिये उसे ड्रिंक की सख्त ज़रूरत है।
- शशिकान्त:** (आलोक से) ठीक है, ले लो। (आलोक शराब लेने के लिये बढ़ता है। उसके बोतल उठाने और पीने के तरीके से पता चलता है कि वो बहुत अधिक पीने वाला आदमी है। बाकी लोग उसे धूरते रहते हैं। शशिकान्त कड़वाहट से) जिन बातों का मुझे पता नहीं था, उनका भी अब पता चल रहा है।
- शैलेश:** प्लीज़ मिस्टर सुराणा, फिर शुरू मत करिये। मैं अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ। (आलोक से) तुम इस लड़की से सबसे पहले कब मिले थे?
- आलोक:** पिछले नवम्बर की एक रात को।
- शैलेश:** कहां?

आलोक: मैकडॉनल्ड के पास 'टॉप इन टाउन' बार में। मैं कुछ मस्ती के मूड में था।

शैलेश: फिर क्या हुआ?

आलोक: मैंने उससे बात करनी शुरू कर दी और उसे पीने के लिये ऑफर किया। जाने के समय तक मुझे बहुत चढ़ चुकी थी।

शैलेश: उसने भी पी?

आलोक: उसने मुझे बाद में बताया कि उसे भी चढ़ गई थी क्यों कि उस दिन उसने कुछ खाया नहीं था।

शैलेश: वो वहां क्यों गई थी?

आलोक: वो उस तरह की लड़की तो नहीं लग रही थी पर शायद किसी औरत ने उसे वहां भेजा था। मुझे भी कुछ समझ में नहीं आया।

शैलेश: वो रात तुमने उसके साथ बिताई थी?

आलोक: हां, शायद मैंने ही उससे कहा था पर मुझे पक्का याद नहीं है। बाद में उसने मुझे बताया कि वो मुझे अपने कमरे में घुसने नहीं देना चाहती थी पर मैं ज़बर्दस्ती धमकियां देकर कमरे में घुस गया।

शैलेश: उसने तुम्हें अन्दर आने दिया?

आलोक: तभी तो सब कुछ हो गया लेकिन मुझे कुछ याद नहीं रहा। ओफ.. क्या कर बैठा। (डांटते हुए) आलोक, तुझे पता भी है तूने क्या किया?

कामिनी: (तेजी से) निधि, अपनी ममा को दूसरे कमरे में ले जाओ।

शशिकान्त: (विरोध करते हुए) पर मैं तो...

निधि: (डाट कर) तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा? (धीरे से) जाओ निधि। (शशिकान्त दरवाजा खोलता है और निधि अपनी माँ को ले कर बाहर चली जाती है। शशिकान्त दरवाजा बन्द करके वापस आता है।)

शैलेश: तुम उससे दुबारा कब मिले?

आलोक: करीब पन्द्रह दिन बाद।

शैलेश: मिलने के लिये पहले तय किया था?

आलोक: नहीं। मुझे न तो उसका नाम याद था और न ही वो जगह जहां वो रहती थी। सब गड़बड़ हो गया था। वो मुझे अचानक स्टेच्यू स्किल पर मिल गई।

शैलेश: फिर शराब पी?

आलोक: हां, पर उस रोज़ मैं उतनी बुरी हालत में नहीं था।

शैलेश: तुम उसे फिर घर ले गये?

आलोक: हां, इस बार हमने कुछ बातचीत भी की। उसने मुझे अपने बारे में बताया। मैंने भी उसे अपने बारे में बताया कि मेरा नाम क्या है और क्या करता हूँ।

शैलेश: और तुमने फिर से वो सब कुछ किया?

आलोक: हां, पर मैं उसे प्यार नहीं करता था। वैसे अच्छी थी, काफो सुन्दर और समझदार। (गुस्से से) तो तुम उसके साथ सोये?

आलोक: हां, मेरी शादी की उम्र हो चुकी है लेकिन शादी हुई नहीं है। और मुझे उन सब गन्दी औरतों से नफरत है जिनके साथ आपके इज्जतदार लोग घूमते हैं।

शशिकान्त: (गुस्से से) बकवास मत करो....

शैलेश: (तेजी से) मैं नहीं चाहता कि आप दोनों इस तरह की बातें शुरू कर दें। ये सब बाद में निपटाइयेगा। (आलोक से) उसके बाद तुमने अगली बार मिलने का तय किया?

आलोक: हां, पता नहीं अगली बार या शायद उसके बाद उसने मुझे बताया कि वो शायद मां बनने वाली है। उसे भी पक्का पता नहीं था जो बाद में पता चला।

शैलेश: वो परेशान तो हुई होगी?

Sound effect

- आलोकः हां, मैं भी बहुत परेशान हो गया था।
 शैलेशः क्या उसने शादी करने के लिये कहा?
 आलोकः नहीं। वो नहीं चाहती थी कि मैं उससे शादी करूँ। उसे पता था कि मैं उसे प्यार नहीं करता।
 एक तरह से वो मुझे बच्चे की तरह ट्रीट करती थी जबकि मैं उसके बराबर का ही था।
 शैलेशः तो उसके बाद तुमने क्या सोचा?
 आलोकः उसके पास कोई नौकरी नहीं थी। वो नौकरी करना भी नहीं चाहती थी। उसके पास पैसे भी नहीं थे तो मैंने ही उससे कहा था कि वो मुझसे पैसे ले लिया करे। ये सब तब तक चलता रहा जब तक कि उसने मना नहीं कर दिया।
 शैलेशः तब तक तुम उसे कितना पैसा दे चुके थे?
 आलोकः ये ही कोई पन्द्रह-बीस हजार।
 शशिकान्तः पन्द्रह-बीस हजार? पीना और घूमना अलग से? इतना पैसा तुम्हें मिला कहां से? (आलोक कहे जवाब नहीं देता)
 शैलेशः मैं भी ये ही पूछना चाहता हूँ।
 आलोकः (बड़ी मुश्किल से) मैंने ऑफिस से ले लिया था।
 शशिकान्तः मेरे ऑफिस से?
 आलोकः हां।
 शशिकान्तः तुम्हारा मतलब तुमने पैसा चुराया था?
 आलोकः जी.. वो.. मैंने... मेरा मतलब है..
 शशिकान्तः (गुस्से से चीख कर) क्या मतलब है तुम्हारा? साफ साफ बोलो। (आलोक जवाब नहीं देता क्योंकि कामिनी और निधि वापस आ जाते हैं)
 निधि; इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है।
 कामिनी: (शशिकान्त से) सौरी, मैं रह नहीं सकी। मुझे पता चलना ही चाहिये कि यहां क्या हो रहा है।
 शशिकान्तः मैं बताऊँ क्या हो रहा है? इसने मान लिया है कि लड़की की इस हालत के लिये ये ही ज़िम्मेदार है, और अब कह रहा है कि ऑफिस से पैसे चुरा कर भी उस लड़की को देता रहा।
 आलोक, तूने पैसे चुराये?
 नहीं, मैं वापस कर देता।
 शब सुन लिया मैंने। कैसे वापस करता?
 कहीं से भी लाता। मुझे कुछ पैसों की ज़रूरत भी थी।
 शशिकान्तः बिना किसी से पूछे ऑफिस से पैसे लेने की तुम्हारी हिम्मत भी कैसे हुई?
 आँफिस की तरफ से कुछ लोगों से पैसा वापस लेना था। मैं उनसे ले आया था।
 फट्री की रसीद दे कर पैसा खुद रख लिया?
 हां।
 अब मुझे पैसे का हिसाब बना कर देना। गधे, जब तू ऐसी हालत में था तो मुझे क्यों नहीं बताया?
 क्योंकि आप ऐसे बाप नहीं हैं जिनका बेटा मुसीबत पड़ने पर उनके पास जा सके।
 शशिकान्तः (गुस्से में) बकवास मत कर, मुसीबत ये है कि बरबाद हो चुका है तू।
 शैलेशः (टोकते हुए) मेरी मुसीबत ये है कि मेरे पास फालतू वक्त नहीं है। जब मैं चला जाऊँ तो इस सबको निपटा लेना। (आलोक से) बस आखरी सवाल। उस लड़की को पता लग गया था कि ये पैसा चोरी का है?
 आलोकः (दीनता से) हां, ये ही तो मुसीबत थी। तभी तो उसने पैसा लेने से इन्कार कर दिया था और तो और मुझसे मिलने से भी इन्कार कर दिया। (एकदम घबराई हुई आवाज में) लेकिन आपको कैसे पता चला? क्या उसने कुछ बताया?
 शैलेशः नहीं, उसने मुझे कुछ नहीं बताया। मेरी उससे कभी बात ही नहीं हुई।

- निधि:
कामिनी:
निधि:
आलोक:

शैलेश:
आलोक:

कामिनी:
आलोक:

निधि:
शशिकान्त:
शैलेश:

आलोक:

शैलेश:

निधि:
शैलेश:

शशिकान्त:
शैलेश:

निधि;
- उसने ममा को बताया।
(हैरानी स) निधि?
ये जानना चाहता है।
(कामिनी स) उसने आपको बताया? वो यहां आई थी क्या? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? उसे तो मालूम भी नहीं था कि मैं यहां रहता हूँ। ये हुआ कैसे? (कामिनी दुखी हो कर सिर हिलाती है पर कोई जवाब नहीं देती) ऐसे मत देखो ममा, मुझे बताओ क्या हुआ था? मैं बताता हूँ। वो तुम्हारी ममा के महिला संघ में मदद मांगने गई थी। जब उसके तुम्हारे साथ नाता खत्म हो गया था, तुम्हारी ममा ने मदद करने से इन्कार कर दिया।
- (ट्रूटे स्वर में) तो आपने मारा उसे। वो मुझे बचाने के लिये आपके पास आई थी आपने उसे भगा दिया। हां, आपने ही मारा है उसे... और उस बच्चे को भी... जिसे वो जन्म देने वाली थी... मेरा बच्चा... आपका अपना पोता... आपने उन दोनों को मार दिया। शर्म आनी चाहिये आपको।
- (बहुत दुखी स्वर में) नहीं... आलोक... प्लीज़... मुझे तो पता भी नहीं था। मैं तो समझ ही नहीं पा रही थी।
- (धमकाते हुए) तुम्हें कभी कुछ समझ में भी आया है? कभी नहीं आया। तुमने कभी कोशिश ही नहीं की... तुम...
- (डरी हुई सी) नहीं आलोक, नहीं...
- (गुस्से से बात काटते हुए) बेवकूफ, तुम्हें हो क्या गया है? ठीक हो जाओ नहीं तो मैं...
- (स्थिति को नियन्त्रण में लेते हुए) रुको। (सब चुपचाप उसे देखते हैं) थोड़ी देर चुपचाप मेरी बात सुनो। मुझे और कुछ नहीं जानना है और आप लोगों को भी नहीं। इस लड़की ने आत्महत्या की है और बहुत बुरी मौत मरी है। लेकिन आप सब ने उसे इस हालत में पहुंचाया। याद रखना, भूलना नहीं (एक-एक को ध्यान से देखता है) हालांकि भूलना बहुत मुश्किल है, मैं जानता हूँ। मिसिज़ सुराणा, याद रखना आपने उसके साथ क्या किया। आपने उसे उस वक्त इन्कार किया जब उसे मदद की सख्त ज़रूरत थी। आप उसे अपनी संस्था की तरफ से मदद दिलवा सकती थीं फिर भी आपने इन्कार कर दिया, याद रखना इसे। (आलोक की तरफ देखता है)
- (दुखी स्वर में) मैं तो उसे भूल ही नहीं सकता।
- सिफ शराब पी कर मस्ती करने के लिये उसको बरबाद कर दिया जैसे कि वो कोई जानवर हो इंसान नहीं। तुम नहीं भूल सकोगे। (निधि की तरफ देखता है)
- (कड़वाहट से) मुझे पता है, मैंने उसे नौकरी से निकलवाया था। मैंने ही शुरूआत की। नहीं, तुमने शुरूआत नहीं की। (थोड़े कठोर स्वर में शशिकान्त से) शुरूआत आपने की। वो अपनी मेहनत की कुछ ज्यादा कीमत मांग रही थी पर आपकी वजह से उसे बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी। अब उसकी वजह से उससे बड़ी कीमत आपको चुकानी पड़ेगी।
- (दुखी हो कर) इन्सपैक्टर, मैं हज़ारों खर्च कर सकता हूँ, हज़ारों...
- मिस्टर सुराणा, आप ग़लत टाइम पर ये ऑफर कर रहे हैं। (बात खत्म करने के लिये अपनी जगह से हिलाता है, नोटबुक बन्द करता है, सब उसी को ध्यान से देखते रहते हैं। वो भी एक एक को ध्यान से दाखता है) मुझे नहीं लगता आप कभी भी इस वाकिये को भूल पायेंगे और न ही मिस्टर कोठारी। पर कम से कम उन्हें उससे सहानुभूति तो थी और उन्होंने उसकी कुछ मदद भी की थी। ये सच है कि शिवानी तो चली गई। अब आप लोग उसका और कुछ नहीं बिगाड़ सकते और न ही कोई मदद कर सकते हैं। और तो और आप उससे माफ़ों भी नहीं मांग सकते।
- (जो धीरे धीरे सुबकियां ले रही है) ये ही तो सबसे बड़ी मुश्किल है।

Music

शैलेश:

याद रखना, एक शिवानी चली गई है लेकिन हजारों, लाखों शिवानियां अभी हमारे साथ बाकी हैं जो जिन्दा हैं - अपने डर, तकलीफों और उम्मीदों के साथ जो हमारी जिन्दगियों के साथ जुड़ी हुई हैं। हम अकेले चाहे कुछ भी सोचते हों, कुछ भी करते हों पर अकेले नहीं जीते। हम सब एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, एक दूसरे के प्रति हमारी जिम्मेदारियां हैं। अगर हम जल्दी ही इस बात को नहीं समझे तो वो दिन दूर नहीं जब हमें खून और नफरत की आग में जल कर सीधना होगा। गुड नाइट।

(अपना सामान उठा कर बाहर चला जाता है। सब स्तब्ध रह जाते हैं। निधि अभी भी सुबक रही है। कामिनी एक कुर्सी पर गिरी हुई है। आलोक दुखी सा कहीं खोया हुआ है। सिर्फ शशिकान्त ही कुछ सक्रिय है जो दरवाजे की आवाज सुन कर उसकी तरफ बढ़ता है। थोड़ा हिचकिचा कर सब पर नजर डाल कर अपने लिये एक पैग बनाता है और एक ही बार में पी जाता है।)

शशिकान्त:

(आलोक से गुस्से में) मैं तुमको ही इस सबके लिये दोषी मानता हूं।
हां मैं हूं।

शशिकान्त:

तुम्हें अभी तक अपनी कर्नी पर पछतावा नहीं हो रहा है?

आलोक:

अब मुझे कोई परवाह नहीं है।

शशिकान्त:

तुम्हें तो किसी बात की परवाह नहीं है लेकिन मुझे तो है। पूरी उम्मीद थी कि अगली बार मुझे अगली बार एम. पी. का टिकिट मिल जायेगा। (आलोक पागलों की तरह से उनकी तरफ इशारा करके हंसता है।)

आलोक:

(हंसते हुए) अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आपको टिकिट मिले या नहीं।

शशिकान्त:

(कटुता से) हां, तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा, लेकिन मुझे तो पड़ता है। मुझे तुम पर शर्म आ रही ह। मुझे भी आप पर शर्म आ रही है। आप दोनों पर।

आलोक:

हमने जो कुछ किया उसके पीछे कारण थे। ये सब तो अचानक हो गया, बस...

निधि:

(तिलमिलाकर) बस...

आलोक:

(बात काटते हुए) आपको याद है आपने खाने के बाद मुझ से और सुनीत से क्या कहा था? आदमी को अपना रास्ता खुद बनाना पड़ता है। अपना काम और अपना ध्यान खुद रखना पड़ता है और उन पागलों की तरफ ध्यान देने की कोई ज़रूरत नहीं जो ये कहते हैं कि हमें एक दूसरे की केयर करनी चाहिये क्योंकि हम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, याद है आपको? और तभी उन पागलों में से एक यहां चला आया ... इन्सपैक्टर। (कटुता के साथ हाँफता है।) मैंने उसके सामने तो आपको ये कहते नहीं सुना कि हर आदमी को अपने लिये जीना चाहिये।

निधि:

(तेजी से) आलोक, जब पापा ने ये बात कही थी उसके बाद ही इन्सपैक्टर आया था न?

आलोक:

हां, तो क्या हुआ?

निधि:

(धीरे से सोचते हुए) कमाल है... कितनी हैरानी की बात है? (उनकी तरफ नजर डालती है, सोचते हुए)

कामिनी:

(उत्तेजित होते हुए) मैं जानती हूं तुम क्या कहना चाहती हो क्योंकि मैं खुद भी इसी बात पर हैरान हूं।

निधि:

हालांकि अब इस बात से कुछ फर्क नहीं पड़ता। लेकिन क्या वो इन्सपैक्टर असली था?

कामिनी:

अगर न हो तो अच्छा ही है। इससे बहुत फर्क पड़ता है।

आलोक:

हमारे लिये वो इन्सपैक्टर ही था।

निधि:

वो ही तो मैं कह रही हूं आलोक... पर वो कुछ अजीब तरह से बिहेव कर रहा था। वो एक आम पुलिस इन्सपैक्टर नहीं लग रहा था।

शशिकान्त:

बहुत ही अकबड़ और रुखा था। मैंने बहुत से पुलिस इन्सपैक्टर देखे हैं, कोई भी इस तरह से बात नहीं करता।

निधि:	पर इस बात से क्या फर्क पड़ेगा?
कामिनी:	बिल्कुल पड़ता है।
आलोक:	नहीं, निधि ठीक कह रही है, इससे वाकई कोई फर्क नहीं पड़ता।
शशिकान्त:	(गुरुसे म) ये तुम कह रहे हो? कमाल है। तुम्हें तो सबसे ज्यादा फर्क पड़ना चाहिये। तुमने माना कि तुमने चोरी की है और वो उसके बारे में जानता भी है। ये सब प्रूव करके वो मय सुबूत के तुम्हें कोई में घसीट सकता है। बाकी हम तीनों का फिर भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। ज्यादा से ज्यादा हमें लोगों के सामने शर्मिन्दा कर देगा लेकिन तुम्हें तो बरबाद कर सकता है।
निधि:	हमने उसे ऐसा तो कुछ बताया नहीं जो उसे पता न हो।
कामिनी:	अब छोड़ो भी, उसे थोड़ी सी इम्फॉर्मेशन रही होगी जो उसे लड़की ने दी होगी, उसी से कुछ अन्दाज़ा लगा लिया होगा।
निधि:	अब क्या हो सकता है? उसी ने तो हमें कनफ्रेंस करने पर मजबूर किया था।
शशिकान्त:	तुमने खुद ही अपने आपको बेवकूफ बनने दिया और क्या?
कामिनी:	(विरोध करते हुए) अब बस भी करिये?
शशिकान्त:	मैं तुम्हें नहीं, इन दोनों को कह रहा हूं। हम दोनों को तो वो पसन्द ही नहीं करता था। आते ही हम से कुछ चिढ़ सा गया था... ब्लडी कम्युनिस्ट। और हम उसका विरोध करने की जगह खुद अपने घर की पोल खोलने लगे।
आलोक:	(तुनकते हुए) मैंने तो आपको भी उसका विरोध करते हुए नहीं देखा।
शशिकान्त:	क्योंकि तब तक तुमने मान लिया था कि तुमने चोरी की थी। उसके बाद मैं क्या बोलता? मैं ही बेवकूफ था जो पहले उससे अकेले में बात नहीं की।
कामिनी:	अब क्या करें?
शशिकान्त:	हां, कुछ तो करना ही होगा और वो भी जल्दी ही।
कामिनी:	(बाहर की बेल बजती है, सभी चौंकते हैं और एक दूसरे को डर कर देखते हैं)
निधि:	अगर माया को पता चल गया तो? मैंने उसे काम निपटाने के लिये रोक लिया था।
सुनीत:	शायद सुनीत आया हो। (सुनीत अन्दर आता है)
कामिनी:	आपको मेरा आना बुरा तो नहीं गा?
सुनीत:	अरे नहीं, नहीं सुनीत।
निधि:	मैं किसी खास वजह से वापस आया हूं। वो इन्सपैक्टर कब गया?
सुनीत:	अभी कुछ देर पहले। उसने तो हम सबको फसा ही दिया।
निधि:	उसका व्यवहार कैसा था?
शशिकान्त:	एकदम डरा रहा था।
कामिनी:	बहुत ही अजीब और रहस्यमय तरीके से बात कर रहा था।
सुनीत:	जिस तरह से वो इनसे और मुझसे बदतमीजी से पेश आ रहा था, वो तो बहुत ही इन्सलिंग था।
शशिकान्त:	हूं...
सुनीत:	(पहले उत्सुकता से सुनीत को देखता है फिर उत्साह से) तुम्हें क्या लगता है?
शशिकान्त:	(धीरे से) वो आदमी पुलिस इन्सपैक्टर नहीं था।
कामिनी:	(हैरानी स) क्या?
सुनीत:	तुम्हें पक्का पता है?
शशिकान्त:	हां, ये ही बताने के लिये तो मैं वापस आया हूं।
	Sound Effect
	वेरी गुड ! तुमने उसके बारे में कुछ मालूम किया क्या?

- सुनीतः** हां, मैं एक पुलिस इन्सपैक्टर को जानता हूं। मैंने उससे इन्सपैक्टर शैलेश दत्त के बारे में पूछा था और उसका हुलिया भी बता दिया था। उसने मुझे पूरे यकीन के साथ बताया कि उस तरह का कोई भी इन्सपैक्टर पुलिस में नहीं है...
- शशिकान्तः** तुमने बताया तो नहीं कि...
- सुनीतः** (काटते हुए) नहीं, मैंने उससे कहा कि मेरा किसी से झगड़ा हो गया था इसलिये मालूम कर रहा था।
- शशिकान्तः** तो वो नकली था।
- कामिनीः** (जीत के स्वर में) मैंने कहा नहीं था कोई असली इन्सपैक्टर हम लोगों से इस तरह से बात कर हो नहीं सकता।
- शशिकान्तः** मैं अभी पक्का कर लेता हूं।
- कामिनीः** क्या करने जा रहे हैं आप?
- शशिकान्तः** डी. आइ. जी. गुप्ता को फोन करके देखता हूं।
- कामिनीः** ध्यान से बात करना।
- शशिकान्तः** (टेलीफोन उठा कर) हां, हां (फोन मिलाता है) दू, थ्री, एट, दू, फार, बन, सिक्स (बाकी लोगों को उत्सुकता से सुनने की कोशिश करते देख) मैं पता लगा कर ही छोड़ूंगा, मुझे शुरू से ही शक था। (फोन पर) गुप्ता जी बोल रहे हैं? मैं शशिकान्त बोल रहा हूं, सारी मैंने इतनी रात को तुम्हें डिस्टर्ब किया... हां... एक बात बताइय, क्या किसी इन्सपैक्टर दत्त ने अभी ज्वाइन किया है? जी शैलेश दत्त, कोई नया आदमी है, लंबा, क्लीन शेव्ड है, हां ठीक है, पक्का हो गया... नहीं, नहीं ऐसे ही कुछ बहस चल रही थी, जी गुड नाइट। (फोन रख कर सबकी तरफ देखता है) शैलेश दत्त नाम का कोई आदमो पुलिस में नहीं है, वो आदमी सचमुच में कोई इन्सपैक्टर नहीं था। सुनीत ने ठीक कहा।
- सुनीतः** अब आप इस जांच के बारे में क्या सोच रहे हैं? क्या कोरी धमकी ही थी?
- शशिकान्तः** और क्या। किसी ने हमें तंग करने के लिये उसे यहां भेज दिया होगा। इस शहर में बहुत स दुश्मन हैं हमारे। हमें शुरू स ही ख्याल रखना चाहिये था।
- कामिनीः** कितना अच्छा होता अगर मैं पहले से ही वहां होती और उसके पूछने से पहले मैं उससे कुछ सवाल करती।
- निधिः** अब ये सब कहने से क्या होगा?
- कामिनीः** तुम सब में सिफ मैंने ही हार नहीं मानी थी। अब सब बैठ कर ये सोचो आगे क्या करना है?
- शशिकान्तः** (हाँ में हाँ मिला कर) तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो। सच बात तो सामने आ चुकी है कि वो आदमी फॉड था और हम किसी साज़िश के शिकार हुए हैं। हो सकता है आगे भी कुछ हो।
- सुनीतः** मुझे तो वो शुरू से ही फॉड लग रहा था।
- शशिकान्तः** गुड ! (आलोक से जो बेचैन हो रहा है) बैठ जाओ आलोक।
- आलोकः** (तुनकते हुए) नहीं, मैं ठीक हूं।
- शशिकान्तः** इसे ठीक कहते हैं? तुम बिल्कुल ठीक नहीं हो। वहां इस तरह से खड़े रहने की ज़रूरत नहीं है जैसे...
- आलोकः** जैसे?
- शशिकान्तः** जैसे तम्हें हमसे कोई लेना-देना नहीं है। अपनी हालत पर ध्यान दो। इस मामले में अगर कोई सबसे ज्यादा फसा हुआ है तो वो तुम हो। इसलिये तुम्हें ध्यान देना ही चाहिये।
- आलोकः** मैं ध्यान दे रहा हूं, और कुछ ज्यादा ही दे रहा हूं। ये ही तो मुसीबत है।
- निधिः** मेरे साथ भी ये ही परेशानी है।
- शशिकान्तः** अब बस भी करो।

कामिनी:	(विरोध करते हुए) रुकिये तो।
शशिकान्त:	बेकार में बकवास किये जा रहे हैं। इन्हें ये तो समझ आ नहीं रहा कि जब ये किस्सा लोगों के बीच जायेगा तो हमारी क्या पोजीशन रह जायेगी।
आलोक:	(चीखते हुए) मैं तो ये ही कहूँगा कि वो लड़की हम लोगों के कारण मरी है। असली बात ये ही है।
शशिकान्त:	(चीखते हुए आलोक को धमकाता है) अपनी बकवास बन्द कर दो या यहां से दफा हो जाओ। (उसकी तरफ घूरते हुए थोड़े नीचे स्वर में) अगर कोई और बाप होता तो अब तक तुम्हें धक्के मार कर बाहर निकाल देता। अपनी जबान पर लगाम दो अगर इस घर में रहना चाहते हो तो।
आलोक:	(गहरी कट्टुता के साथ) मुझे कोई परवाह नहीं है, मैं यहां रहूँ या न रहूँ।
शशिकान्त:	तुम्हें तब तक रहना पड़ेगा जब तक तुम उस चुराई हुई रकम का हिसाब नहीं दे देते या वापस नहीं कर देते, समझे।
निधि:	लेकिन पापा, उससे शिवानी तो वापस नहीं आ सकती।
आलोक:	हां, और इसे भी नहीं झुठलाया जा सकता कि हम लोगों ने ही उसे इस हालत तक पहुँचाया है।
सुनीत:	लेकिन ये कहानी सच भी है या नहीं, ये कैसे कहा जा सकता है?
आलोक:	तुम्हें अभी पूरी कहानी का पता ही कहां है।
निधि:	शायद अब तुम ये प्रूव करना चाहोगे कि तुमने पिछली गर्मियां उस लड़की के साथ नहीं बिताई?
सुनीत:	मैंने उस लड़की को रखा, ये मैं पहले ही मान चुका हूँ। मुझे इसका अफ्सोस है निधि।
निधि:	ठीक है पर तुम्हीं सबसे अच्छी पोजीशन में हो जैसा कि उस पुलिस इन्सपैक्टर ने कहा।
शशिकान्त:	(गुस्से से) वो पुलिस इन्सपैक्टर नहीं था।
निधि:	(पलट कर गुस्से में) तो फिर क्या हमारी आत्माओं का इन्सपैक्टर था? ये मत भूलिये कि हम लोगों ने उस लड़की को आत्महत्या करने पर मजबूर किया था।
सुनीत:	हमने? कौन कहता है? क्योंकि हमसे ज्यादा तो उस 'सो कॉल्ड इन्सपैक्टर' ने फॉड किया है।
निधि:	ये कैसे कह सकते हो?
सुनीत:	बिल्कुल कह सकता हूँ। यहां एक आदमी झूठा इन्सपैक्टर बन कर आया, ये एक तरह की साजिश है। और उसने यहां आ कर क्या किया? बड़ी चालाकी से छोटी-मोटी खबरों को इधर-उधर से इकट्ठा करके उसने हमें कफ्स करने के लिये मजबूर कर दिया कि किसी न किसी तरह से उस लड़की की मौत के पीछे हम लोगों का हाथ है।
आलोक:	हम सब मान चुके हैं।
सुनीत:	ओ के! मैं तुम्हारी बात मान रहा हूँ पर ये तो नहीं कहा जा सकता कि ये वो ही लड़की थी। (सबको विजयी भाव से देखता है) सब असमंजस में पड़ जाते हैं। फिर वो शशिकान्त की तरफ मुड़ता है। थोड़े अन्तराल के पश्चात् देखिये अंकल, आपने शिवानी नाम की लड़की को नौकरी से निकाला। आप इस वाकिये को भूल चुके थे लेकिन जब उसने फोटो दिखाई तो आपको याद आ गया। ठीक है ना?
शशिकान्त:	ये बात तो ठीक है पर इससे क्या मतलब निकलता है?
सुनीत:	उसके बाद वो ये जान गया कि निधि ने उस उसे दुकान की नौकरी से निकलवा दिया। उसने हमें बताया कि ये वो ही लड़की है। फोटो दिखाते ही निधि ने उसे पहचान लिया।
निधि:	हां, वो ही फोटो था।
सुनीत:	तुम्हें कैसे पता कि ये वो ही फोटो था? क्या तुमने वो फोटो देखा था जो अंकल ने देखा था।

- निधि:
सुनीत:
निधि:
सुनीत:
शशिकान्त:
सुनीत:
कामिनी:
शशिकान्त:
कामिनी:
शशिकान्त:
कामिनी:
निधि:
सुनीत:
कामिनी:
सुनीत:
शशिकान्त:
सुनीत:
आलोक:
सुनीत:
आलोक:
सुनीत:
आलोक:
शशिकान्त:
आलोक:
- नहीं, वो मैंने नहीं देखा था।
और अंकल ने वो फोटो देखा था जो तुमने देखा था?
नहीं।
चूंकि हमारे पास कोई प्रूफ नहीं है कि वो एक ही फोटो था इसलिये इस बात का क्या प्रूफ है कि ये वो ही लड़की थी। मुझे लो, मैंने तो फोटो देखा ही नहीं। याद है, उसने मुझे अचानक ही ये कह कर फसा लिया कि उसने अपना नाम श्रीया रख लिया था। मैं पकड़ा गया क्योंकि मैं श्रीया नाम की लड़की को जानता था।
(बात को समझ कर, जल्दी से) तुम सही कह रहे हो, इस बात का कोई सुबूत नहीं है कि ये श्रीया ही शिवानी थी। हमने तो सिफ उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। हमने तो ये भी मान लिया कि वो पुलिस इन्सपैक्टर है जबकि अब हम जानते हैं कि वो झूठ बोल रहा था। हो सकता है वो शुरू से आखिर तक झूठ ही बोल रहा हो।
और क्या? अच्छा जब मैं बाहर चला गया था तो बाद में क्या हआ?
मैं आलोक के बाहर चले जाने के बाद कुछ परेशान हो गई थी क्योंकि उस ने कहा कि अगर वो वापस नहीं आया तो वो खुद जा कर उसे पकड़ लायेगा। बातों बातों में ही अचानक उसने कहा कि म दो हफ्ते पहले ही शिवानी से मिल चुकी हूं।
हां, ये ही कहा था उसने।
और मैं बेवकूफों की तरह मान भी गई।
पता नहीं तुम क्यों मान गई। जब वो तुम्हारे महिला संघ में आई थी तब उसने अपना नाम शिवानी तो बताया नहीं था?
नहीं, बिल्कुल नहीं लेकिन मैं इतनी परेशान हो गई थी कि जब अचानक उसने मुझसे कुछ सवाल किये तो मैंने वो ही जवाब दे दिये जो वो चाहता था।
लेकिन ममा उसने आपको फोटो भी दिखाया था जिसे आपको पहचाना भी था।
किसी और ने भी वो फोटो देखा था क्या?
नहीं, उसने सिफ मुझे ही दिखाया था।
हो सकता है वो आपको किसी और ही लड़की की फोटो दिखा रहा हो जो न तो शिवानी थी और न ही श्रीया, जिसने आपके महिला संघ में मदद के लिये अपील की थी।
सुनीत बिल्कुल ठीक कह रहा है। वो हर बार अलग फोटो दिखाता रहा और हम बेवकूफ बनते रहा। हो सकता है हम अलग-अलग लड़कियों को पहचानते रहे हों।
बिल्कुल। आलोक, क्या तुम्हें भी उसने फोटो दिखाई थी?
नहीं, जब मेरी बारी आई, उसने फोटो दिखाने को ज़रूरत नहीं समझी। पर मुझे लगा ये वो ही लड़की होनी चाहिये जिसे मैं जानता हूं, और जो ममा के पास भी गई थी।
क्यों, ऐसे कैसे कह सकते हो?
क्योंकि उसने ये कहा था कि मैं चोरी का पैसा नहीं लूंगी और जिस लड़की को मैं जानता हूं उसने भी ये ही कहा था।
पर ये गलत भी तो हो सकता है?
एक लड़की ने आत्महत्या कर ली तो मैं कैसे मान लूं कि ये गलत है। आप अपने आप को बचाने की चाहे जितनी कोशिश कर लो पर मैं नहीं कर सकता, और न ही ममा। हमने उस लड़की के साथ अन्याय किया है।
(अचानक जैसे कोई नया ख्याल आया हो) थोड़ी देर रुको, अपने आपको दोषी ठहराने में इतनी जल्दी मत करो। तुम्हारी मम्मी के साथ हुआ इन्टरव्यू भी उतना ही झूठा सिद्ध हो सकता है जितना कि वो पुलिस इन्सपैक्टर। ये सब किसी की साज़िश भी हो सकती है।
(झूला कर) ये कैसे हो सकता है? क्या लड़की मरी नहीं?

वो कौन था ...?

सुनीतः	कौन सी लड़की? इस हिसाब से तो चार-पांच लड़कियां होनी चाहिये।
आलोकः	मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। जिसे मैं जानता था वो मर चुकी है।
शशिकान्तः	ठोक है, लेकिन हमें कैसे मालूम वो मर चुकी है?
सुनीतः	(निर्णयात्मक स्वर में) इस बात को तो बड़ी आसानी से पता किया जा सकता है।
निधिः	कैसे?
सुनीतः	अस्पताल में फोन करके।
कामिनीः	(परेशान हो कर) कुछ ठीक नहीं लगता। इतनी रात गये वहां फोन करना...।
सुनीतः	नहीं, कुछ नहीं होगा।
कामिनीः	(ज़ोर देते हुए) और अगर नहीं हुई तो?
सुनीतः	देखते हैं... (सुनीत फोन के पास जाकर अस्पताल का नम्बर देखता है फिर मिलाता है। बाकी सभी परेशान उसे देखते हैं) दू, दू, थ्री, दू, फाइव, दू, सेवन... हैलो, हॉस्पिटल? मैं सुनीत कोठारी बोल रहा हूं, कोठारी ग्रुप ऑफ कम्पनीज से... हां... मैं अपने यहां की एक एम्प्लॉय के बारे में पूछना चाहता हूं... क्या आज दोपहर आपके यहां किसी ऐसी लड़की की बॉडी लाई गई है जिसने ज़हर खा कर या किसी और तरह से आत्महत्या की हो ? हां.... मैं इन्तज़ार करता हूं... (सब की ओर देखता है, सब के चेहरे पर परेशानी और उत्सुकता के भाव हैं। शशिकान्त माथे से पसीना पौछ रहा है, निधि कांप रही है, आलोक हाथों को खोल-बन्द कर रहा है, आदि। कुछ अन्तराल के पश्चात्) जी... आपको पता है... आइ सी... हां... ठीक है.. थैन्क्यू , थैन्क्यू वैरी मच... गुड नाइट... (फोन रख कर सब की तरफ देखता है) ज़हर की बात करते हैं, उनके पास तो हफ्तों से आत्महत्या का कोई केस नहीं आया है।
शशिकान्तः	(लगभग उछलते हुए) देखा प्रूव हो गया, सारी कहानी मन-गढ़न्त थी। (तसल्ली से) क्या कोई इतना बेवकूफ भी बन सकता है... लेकिन चलो.. (दूसरों की तरफ देख कर मुस्कुराता है)
सुनीतः	सुनीत, थोड़ी हो जाये।
कामिनीः	थैन्क्स, मैं तो एक पैग ज़रूर लूंगा।
शशिकान्तः	ये तो मानना पड़ेगा, सुनीत ने कमाल कर दिया, थैन्क यू सुनीत।
निधिः	(खुशी के स्वर में निधि से) चलो, अब सब ठीक हो गया है ना, सब कुछ तुम्हारे सामने है, अब छोड़ो न यार (इन्सपैक्टर की आखरी स्पीच की नकल करते हुए) तुम सबने मिल कर उसे मौत तक पहुंचाया। (निधि और आलोक की तरफ इशारा करते हुए हँसता है) और उस वक्त तुम दोनों की शक्ति देखने लायक थी जब उसने ये कहा। (निधि दरवाज़े की तरफ बढ़ती है) क्या हुआ बेटे, सोने जा रही हो?
शशिकान्तः	(परेशान) मेरा दिमाग भन्ना गया है, मैं इससे बाहर निकलना चाहती हूं। जिस तरह से आप बात कर रहे हैं मुझे डर लग रहा है।
निधिः	(ज़ोर दे कर) क्या पागलपन है। अरे, अब तो खुश होने का टाइम आया है। मेरी बात मानो, सुनीत से वो अंगूठी वापस मांग लो। देख लेना उसके बाद तुम्हें भी अच्छा लगेगा।
आलोकः	(भावपूर्ण स्वर में) आप सब ऐसा जता रहे हैं जैसे सब कुछ वैसा ही है जैसा पहले था।
निधिः	मैं नहीं।
शशिकान्तः	हो सकता है। लेकिन बाकी सभी को देख कर तो ऐसा ही लग रहा है।
कामिनीः	तो क्या बदल गया?
सुनीतः	दोनों कुछ ज्यादा ही थक गये हैं। जब सुबह उठेंगे तो अपने आप सब ठीक हो जायेगा।
निधिः	निधि, अब सब ठीक हो गया है। (अंगूठी निकाल कर) अब इसका क्या करना है?
शशिकान्तः	नहीं, अभी नहीं। मुझे सोचने का वक्त चाहिये।
निधिः	(आलोक और निधि की तरफ इशारा करते हुए) ज़रा इन दोनों की तरफ देखो तो सही, ये हैं आजकल के जवान बच्चे। इतने समझदार होते हुए भी एक छोटा सा मज़ाक तक नहीं कर

S
o
u
n
d
E
f
f
e
c
t

सकते। (टेलीफोन की घंटी बजती है, एक क्षण के लिये चुप्पी। सब एक दूसरे की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं। थोड़ी देर बाद शशिकान्त फोन उठाता है। जी..? हां, शशिकान्त सुराणा बोल रहा हूं... क्या... यहां... हैलो....हैलो.... (दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया है। शशिकान्त धीरे से फोन रखता है और घबरायी निगाहों से सबको देखता है।) पुलिस का फोन था। अस्पताल ले जाते हुए एक लड़की की मौत हो गई है। उसने ज़हर खा लिया था। पुलिस इन्सपैक्टर यहां आ रहा है इन्कायरी के लिये।
(सब स्तब्ध रह जाते हैं।)

Closing Music

अन्धकार

॥ समाप्त ॥